कोर्स 07 : प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण

- **कोर्स की जानकारी**
  - कोर्स का विवरण
  - मुख्य शब्द
- **कोर्स का सिंहावलोकन**
  - कोर्स निर्देश (Text) (7_1_hin_course_instruction)
  - उद्देश्य (Slide Text) (7_2_hin_objectives)
  - कोर्स की रूपरेखा (Slide Text) (7_3_hin_course_outline)
- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण का परिचय**
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय (Video) (7_4_hin_national_education_policy_and_multilingual_education_introduction)
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय – प्रतिलिपि (Text) (7_5_hin_national_education_policy_and_multilingual_education_introduction_transcript)
- **हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना**
  - हमारे देश में बहुभाषिकता (Text) (7_6_ hin_multilingualism_in_our_country) (660 words)
- **बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव**

- गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें (Text - Blog)
  (7_7_hin_activity1_share_your_reflection)
- अपरिचित भाषा और बच्चों की दुविधा (Text)
  (7_8_hin_unfamiliar_language_and_children_dilemma)
  (330 words) (485 words)
- गतिविधि 2 : अपने विचार साझा करें (Text - Blog)
  (7_9_hin_activity2_share_your_thoughts)

- **शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के उपयोग का महत्त्व**
  - कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे? (Video)
    (7_10_hin_using_children's_language_in_the_classroom_why_and_how)
  - कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे? - प्रतिलिपि (Text)
    (7_11_hin_using_children's_language_in_the_classroom_why_and_how_transcript)
  - आरंभिक कक्षाओं में बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग का महत्व (Text)
    (7_12_hin_importance_of_using_mother_tongue_in_foundational_classes) **(512 words)**
  - गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें (DIKSHA Activity)
    (7_13_hin_activity3_check_your_understanding)

- बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है? (Video)
  (7_14_hin_how_does_childrens_language_help_them_learn_another_language)
- बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है? - प्रतिलिपि (Text)
  (7_15_hin_how_does_childrens_language_help_them_learn_another_language_transcript)
- गतिविधि 4 : स्वयं करें (Text)
  (7_16_hin_activity4_do_yourself)

- **बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान**
  - हमारे देश की नीतियाँ, कानून और संविधान (Text)
    (7_17_hin_policies_laws_and_the_constitution_in_our_country) (166 words)
  - गतिविधि 5 : स्वयं करें (Text)
    (7_18_hin_activity5_try_yourself)
- **बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व**
  - बहुभाषी शिक्षण क्या है? (Text)
    (7_19_hin_what_is_multilingual_education) **(340 words)**
  - बहुभाषी शिक्षण के लाभ (Text)
    (7_20_hin_benefits_of_multilingual_education) **(95 words)**

- बहुभाषी शिक्षण की विशेषताएँ (Text)
  (7_21_hin_features_of_multilingual_education)
- गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करे (DIKSHA Activity)
  (7_22_hin_activity6_check_your_understanding)

- **बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण**
  - बालवाटिका में बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग (Text)
    (7_23_hin_children's_language_in_balvatikas) **(342 words)**

- **बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ**
  - बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग (Text)
    (7_24_hin_childrens_language_in_the_oral_domain) (873 words)
  - दूसरी भाषा सिखाने की रणनीतियाँ (Text)
    (7_25_hin_strategies_for_second_language_teaching)
  - अपनी कक्षा में बहुभाषी शिक्षण कैसे करें? (Text)
    (7_26_hin_multilingual_teaching_in_your_classroom)

- **सारांश**
  - सारांश (Mind Map) (7_27_hin_summary)

- **पोर्टफ़ोलियो गतिविधि**
  - असाइनमेंट (Text) (7_28_hin_assignment)

- **अतिरिक्त संसाधन**
  - सन्दर्भ (Text) (7_29_hin_references)

- वेब लिंक (Text) (7_30_hin_weblinks)

- **मूल्यांकन**
  - प्रश्नोत्तरी (Text) (7_31_hin_quiz)

प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण

कोर्स की जानकारी

कोर्स का विवरण

इस कोर्स में बताया गया है आरंभिक शिक्षण में बच्चों की मातृभाषा को इस्तेमाल करना क्यों अनिवार्य है और ऐसा करने के लिए किन रणनीतियों को अपनाया जा सकता है। यह कोर्स हमें सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बच्चों की भाषा के प्रयोग के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने में मदद करेगा।

मुख्य शब्द

NISHTHAFLN, NATIONAL EDUCATION POLICY 2020, MOTHER TONGUE, HOME LANGUAGE, FIRST LANGUAGE, SECOND LANGUAGE, SCHOOL LANGUAGE, MEDIUM OF INSTRUCTION, FAMILIAR LANGUAGE, UNFAMILIAR LANGUAGE, MULTILINGUAL EDUCATION

कोर्स का सिंहावलोकन

कोर्स निर्देश (Text) (7_1_hin_course_instruction)

शिक्षार्थी के लिए निर्देश

निपुण भारत कार्यक्रम के निष्ठा 3.0 में आपका स्वागत है। प्रत्येक शिक्षक/विद्यालय प्रमुख से अपेक्षा की जाती है कि वे सम्पूर्ण 12 कोर्स करें।

पाठ्यक्रम का तरीका

प्रत्येक शिक्षार्थी को शत-प्रतिशत पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए वीडियो, पाठ्य सामग्री और विभिन्न प्रकार की अभ्यास गतिविधियों के रूप में प्रस्तुत सभी पाठ्यक्रम सामग्री से गुजरना अनिवार्य है। अधिगम विस्तार हेतु इस पाठ्यक्रम सामग्री से परे अतिरिक्त संसाधन प्रदान किए गए हैं।

प्रमाणीकरण

पाठ्यक्रम के अंत में, शिक्षार्थियों से एक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रश्नोत्तरी लेने की अपेक्षा की जाती है। 3 प्रयासों के भीतर अंतिम मूल्यांकन में 70% हासिल करने वाले शिक्षार्थियों को दीक्षा पोर्टल में भाग लेने हेतु 'सहभागिता प्रमाणपत्र' ऑनलाइन प्राप्त होगा। प्रमाणपत्र को तैयार होने में 0-15 दिन लग सकते हैं। इसे नीचे दिए गए चरणों का पालन करते हुए दीक्षा पोर्टल के प्रोफाइल पेज से डाउनलोड किया जा सकता है :

दीक्षा पोर्टल में सर्टिफिकेट कैसे प्राप्त एवं डाउनलोड करें

चरण 1 : प्रोफाइल पेज पर जाएं, प्रोफाइल पर जाने के लिए, अपनी स्क्रीन के ऊपरी दाएं कोने में अपने नाम के पहले अक्षर के साथ वाले सर्कल आइकन पर क्लिक करें, जैसा कि लाल बॉक्स में हाइलाइट किया गया है

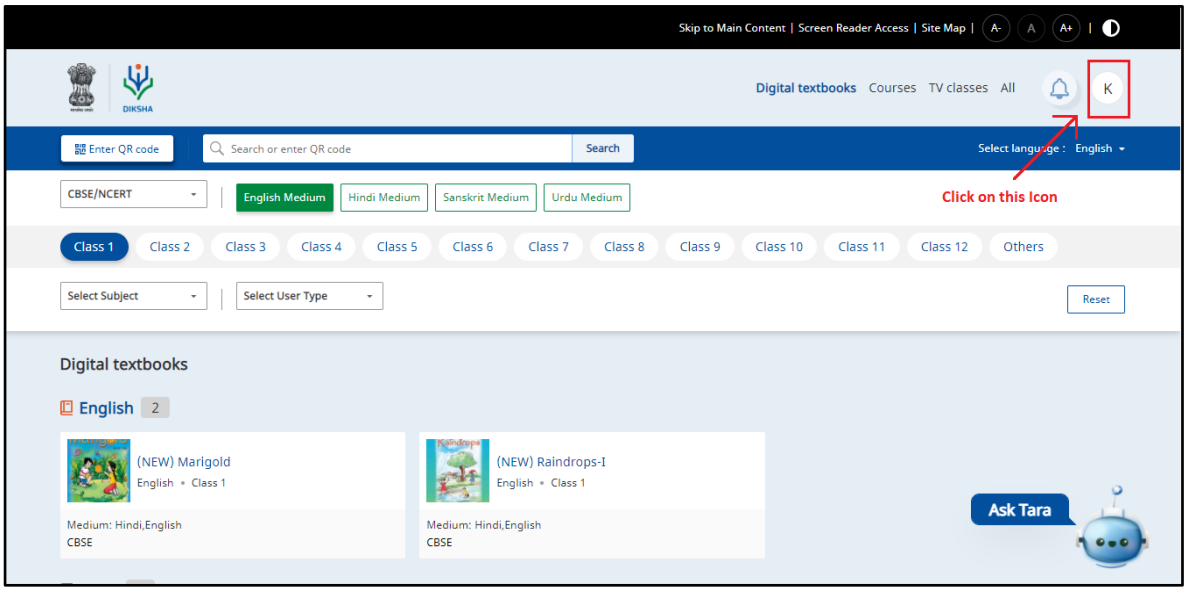

चरण 2 : जैसा कि दाहिने मेनू से लाल बॉक्स में हाइलाइट किया गया है, प्रोफ़ाइल विकल्प चुनें।

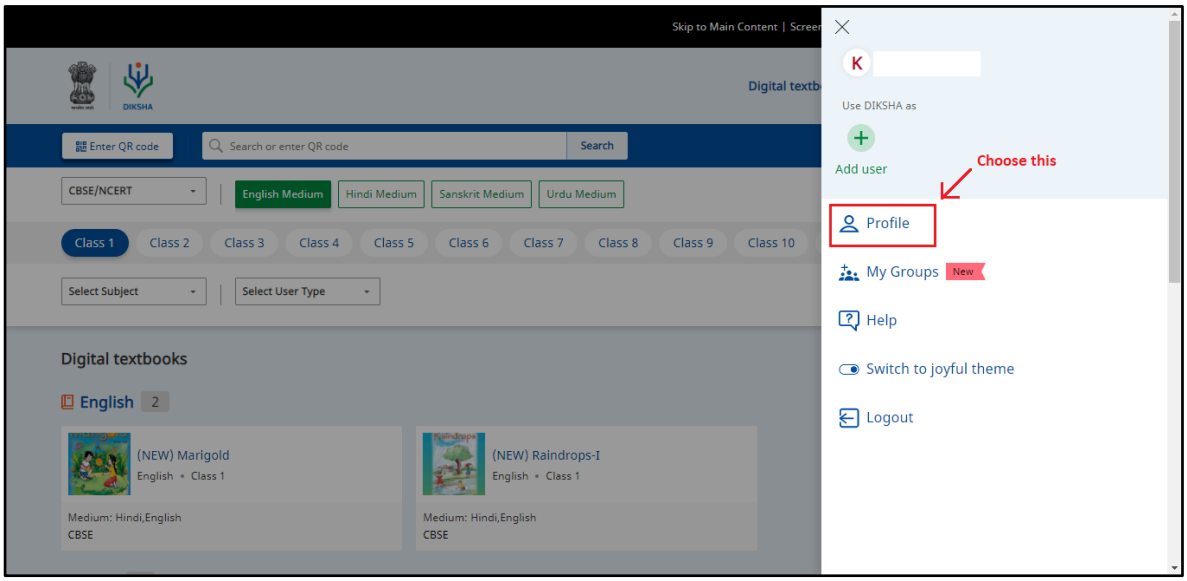

चरण 3 : फिर आपका प्रोफ़ाइल अनुभाग दिखाई देगा, आगे पृष्ठ में नीचे स्क्रॉल करें और आपको अपना माई लर्निंग एंड लर्नर पासबुक अनुभाग मिलेगा और फिर अपने पूरे किए गए पाठ्यक्रम से संबंधित प्रमाणपत्र को डाउनलोड करने के लिए लाल बॉक्स में हाइलाइट किए गए "प्रमाणपत्र डाउनलोड करें" बटन पर क्लिक करें। और आपका सर्टिफिकेट डाउनलोड होना शुरू हो जाएगा।

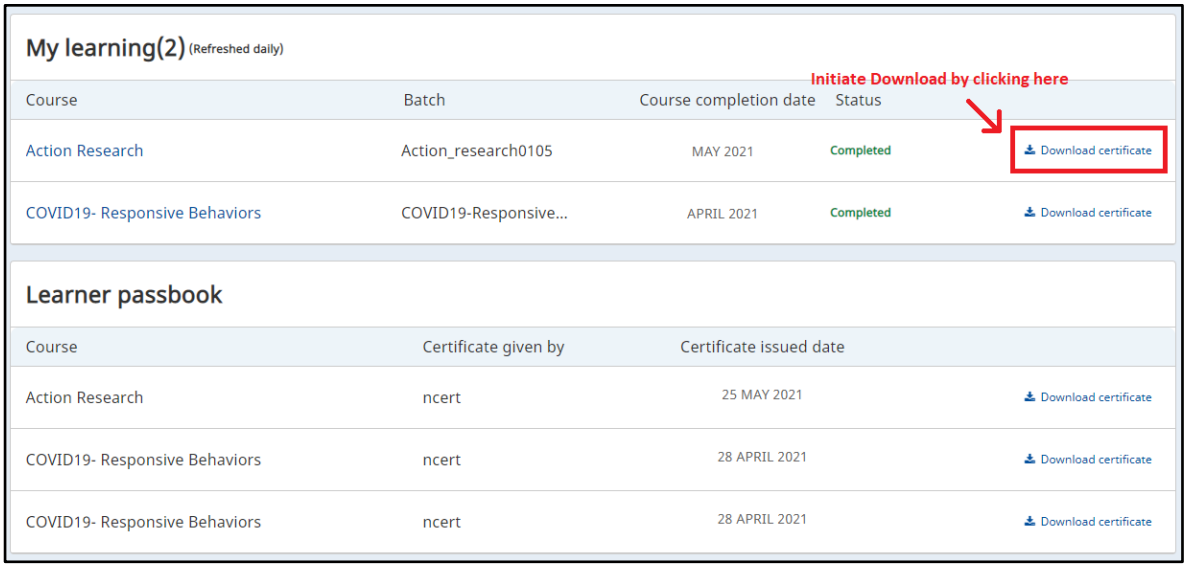

<u>उद्देश्य</u> (Slide Text) (7_2_hin_objectives)

उद्देश्य

इस कोर्स को पूर्ण करने के पश्चात् शिक्षार्थी सक्षम होंगे -

- हमारे देश की बहुभाषिकता का वर्णन कर सकेंगे।
- बच्चों के संदर्भ में भाषा संबंधी परिस्थिति का विश्लेषण कर सकेंगे।

- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के इस्तेमाल का महत्त्व बता सकेंगे।
- बहुभाषी शिक्षण की अवधारणा और महत्व की व्याख्या कर सकेंगे।
- शिक्षण में बच्चों की भाषा के इस्तेमाल की कुछ रणनीतियाँ बता सकेंगे।
- दूसरी भाषा सिखाने के कुछ कारगर तरीकों की व्याख्या कर सकेंगे।

कोर्स की रूपरेखा(Slide Text) (7_3_hin_course_outline)

कोर्स की रूपरेखा

- हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना
- बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा का महत्त्व
- बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान
- बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व
- बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण
- बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

नई शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण का परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय (Video)

(7_4_hin_national_education_policy_and_multilingual_teaching_introduction**)**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय – प्रतिलिपि (Text)

(7_5_hin_national_education_policy_and_multilingual_teaching_introduction_transcript)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और बहुभाषी शिक्षण : परिचय – प्रतिलिपि

आप सभी शिक्षक साथियो को मेरा नमस्कार,

निष्ठा कोर्स के 'प्राथमिक कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण' के कोर्स में आप सबका स्वागत है।

साथियो, भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान पर विशेष ज़ोर दिया गया है। हाल ही में भारत सरकार ने निपुण भारत के नाम से एक मिशन की शुरुआत की है जिसके अंतर्गत हम सब को यह सुनिश्चित करना है कि कक्षा 3 तक देश का हर बच्चा बुनियादी कौशलों को हासिल कर सके। इस उद्देश्य को हासिल करने के लिए हमारे सामने कई चुनौतियां हैं। इस कोर्स में हम इनमें से एक बड़ी चुनौती पर बात करेंगे - और वह है - प्रारंभिक वर्षों में शिक्षण के लिए प्रयोग होने वाली भाषा की चुनौती।

भारत में लगभग 35 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में ऐसी भाषा के माध्यम से सीख रहे हैं जो उनके लिए परिचित नहीं है। जब ये बच्चे कक्षा 1 में स्कूल में भर्ती होते हैं, तो वे उस स्कूल की भाषा को या तो बिल्कुल नहीं जानते, या उसे बोलने-समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। ऐसे में निपुण भारत में दिए गए बुनियादी कौशलों के लक्ष्य को कैसे प्राप्त किया जाए? जिस भाषा को बच्चे ठीक

तरह से समझ नहीं पाते हैं, उसमें वे समझ के साथ धाराप्रवाह रूप से पढ़ने और स्वतंत्र रूप से लिखने में कैसे सक्षम होंगे?

आपने देखा होगा कि एनईपी (NEP) और निपुण भारत दोनों ही में एफएलएन (FLN) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, बच्चों की घर की भाषा के प्रयोग यानी बहुभाषी शिक्षण पर विशेष ज़ोर दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्पष्ट रूप से कहती है कि "वर्तमान में प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा में जो अंतर है, उनके बीच एक सेतु बनाने के प्रयास किये जाने चाहिए"। निपुण भारत में भी यह सटीक रूप से कहा गया है कि बच्चों की मातृभाषा का प्रयोग एफएलएन के उद्देश्य प्राप्त करने के लिए एक बुनियादी शर्त है। आइए यह समझते हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की समझ की भाषा का प्रयोग क्यों आवश्यक है।

स्कूली शिक्षा में सीखने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है 'भाषा'; या यूँ कहें कि 'भाषा' सभी कुछ सीखने का आधार है। जब बच्चे बात करते हैं। किसी की बात को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, कहानी/कविता पढ़ते हैं और समझने के लिए तर्क और निष्कर्ष निकालने जैसी प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं, तो ये सभी काम भाषा के माध्यम से होते हैं। पर यह सब तभी संभव है जब बच्चों के भाषा संबंधी कौशल अच्छी तरह विकसित हों और उनकी भाषा पर पकड़ मज़बूत हो। जो भाषाएँ बच्चे घर से समझते और बोलते हुए स्कूल आते हैं, उन भाषाओं को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में स्थान न देकर, हम इन बच्चों को उनके सीखने के मौलिक अधिकार से वंचित कर देते हैं। कई शोध हमें यह बताते हैं कि बच्चों की घर की भाषा या उनकी परिचित भाषा के प्रयोग से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों

की सक्रिय भागीदारी बढ़ती है, वे अन्य विषयों में भी बेहतर सीख पाते हैं और उनका अपने आप में विश्वास बढ़ता है। इतनी ही नहीं, घर की भाषा की मज़बूत बुनियाद अन्य भाषाओं के अच्छे विकास में भी सहायक होती है।

दरअसल, बच्चों के सीखने के दृष्टिकोण से सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि आरंभिक कई वर्षों तक बच्चों की घर की भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाया जाए और साथ-साथ अन्य भाषाओं को धीरे-धीरे पाठ्यक्रम में जोड़ा जाए। पर जैसा कि हम जानते हैं, इसमें समय लग सकता है और सभी परिस्थितियों में शायद यह संभव भी नहीं होगा। पर बच्चों की भाषा को औपचारिक रूप से सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में जोड़ने के अन्य तरीके भी हैं। जैसे, बच्चों की परिचित भाषाओं को रणनीतिक तरीके से पूरी योजना के साथ मौखिक काम में सम्मिलित करना। इसके साथ-साथ अपरिचित भाषा सिखाने की उचित रणनीतियों का उपयोग भी करना चाहिए। ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर हम इस कोर्स में चर्चा करेंगे। इस कोर्स के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के घर की भाषा का उपयोग करना क्यों आवश्यक है और इस कार्य को प्रभावी रूप से करने के लिए किन रणनीतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

एक मोटे तौर पर कहूँ तो बहुभाषी शिक्षण का अर्थ होता है - बच्चों की परिचित भाषा व अन्य भाषाओं का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में साथ-साथ प्रयोग करना। एक ऐसी पद्धति जहाँ शुरुआत में समझ का माध्यम बच्चों की भाषा रहे और बच्चे धीरे-धीरे अन्य भाषाओं में भी महारत हासिल कर सकें। एक और ज़रूरी बात यह है कि बच्चों की घर की भाषा या समझ की भाषा, इसको सीखने-सिखाने

की प्रक्रिया में स्थान देना और बच्चों को राज्य की भाषा और अंग्रेज़ी सीखना इन दोनों में कोई विरोधाभास नहीं है - असल में ये एक दूसरे के पूरक हैं।

बहुभाषी शिक्षण का सही अर्थ है बच्चों की भाषा, स्कूल या राज्य की भाषा और अंग्रेजी को साथ लेकर चलना। यदि हम बच्चों को अन्य भाषाएँ अच्छी तरह से सिखाना चाहते हैं, तो उसकी शुरुआत उनकी परिचित भाषा या घर की भाषा की मज़बूत नींव के आधार पर ही होनी चाहिए। इस कोर्स में हम इन मुद्दों को विस्तार से पढ़कर अपनी समझ मज़बूत करेंगे। मैं आशा करता हूँ कि इस कोर्स को पूरा करने के बाद आप बहुभाषी शिक्षण के सिद्धांतों के बारे में गहन रूप से सोच पाएँगे और कुछ रणनीतियों को अपनी कक्षा में लागू कर पाएँगे। मैं अपनी बात को छत्तीसगढ़ के एक प्राथमिक शिक्षक श्री द्रोण साहू द्वारा लिखी गई कुछ पंक्तियों के साथ समाप्त करना चाहता हूँ। वे कहते हैं –

मेरी शिक्षा,

मेरी परीक्षा।

मेरा आकलन,

मेरा मूल्यांकन।

मुझे पढ़ाना,

मुझे सिखाना।

जब मैं ही हूँ इन सबके बीज में, केंद्र में।

मेरी भाषा क्यों नहीं है इस बीच में?

आप सबका बहुत - बहुत धन्यवाद।

हमारे देश में भाषाओं का तानाबाना

<u>हमारे देश में बहुभाषिकता</u> (Text) (7_6_ hin_multilingualism_in_our_country)

हमारे देश में बहुभाषिकता

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ अनेकों भाषाएँ बोली जाती हैं। अलग-अलग अध्ययन और सर्वेक्षण भारत में बोली जाने वाली भाषाओं के अलग-अलग आंकड़ें देते हैं।

भाषाएँ	**स्रोत**
1652 मातृभाषाएँ	Census of India,1961
1369 मातृभाषाएँ	Census of India, 2011
462 भाषाएँ	Ethnologue (Simons and Fennig, 2018)
780 भाषाएँ	People's Linguistic Survey of India (PLSI), 2010

2011 की जनगणना (Census Survey) के अनुसार हमारे देश के एक-चौथाई से अधिक लोग दो भाषाएँ बोलते हैं, जबकि 7% लोग तीन भाषाएँ बोलते हैं। सच तो

यह है कि हममें से अधिकतर लोग उद्देश्य और आवश्यकता के अनुसार दो या दो से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल आसानी से करते हैं।

मैं एक वारली पेंटर हूँ। मैं वारली जनजाति की हूँ और महाराष्ट्र के पालघर क्षेत्र में रहती हूँ। घर में मैं अपने परिवार के सदस्यों के साथ वारली भाषा में बात करती हूँ। मैं और मेरा छोटा भाई कई हिंदी फिल्में देखते हैं और एक-दूसरे से हिंदी में बातचीत भी करते हैं। अपने समुदाय में, मैं वारली या वडवली में लोगों से बात करती हूँ। जब मुझे बाजार से कुछ खरीदना होता है, तो मैं दुकानदारों के साथ मराठी बोलती हूँ। जब मैं काम के लिए मुंबई जाती हूँ, तो ग्राहकों से हिंदी या हिंदी मिश्रित अंग्रेजी में बात करती हूँ। कई बार बड़ी चित्रशाला (आर्ट गैलरी) में कुछ ग्राहक यूरोप से भी आते हैं, जो फ्रेंच या जर्मन भाषा में बात करते हैं। मैं इन भाषाओं में केवल कुछ शब्दों को ही समझ सकती हूँ।

किसी व्यक्ति अथवा समुदाय के द्वारा दो या अधिक भाषाओं का प्रयोग **बहुभाषिकता** है। बहुभाषिकता को हम दो या दो से अधिक भाषाओं में सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने या लिखने की क्षमता के रूप में भी देखते हैं। यह बहुभाषिता हमारे भारतीय जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

ध्यान दें कि अधिकतर भारतीय लोगों द्वारा अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग करना ही भारतीय बहुभाषिकता की पहचान नहीं है। भारतीय बहुभाषिकता इससे कहीं अधिक व्यापक और अनोखी है! भारतीय संदर्भ में अक्सर एक ही भाषा के अलग-अलग रूप पाए जाते हैं। अलग-अलग भाषाओं और बोलियों के

मिश्रित रूप भी आमतौर पर देखने को मिलते हैं। आइए, भारतीय बहुभाषिकता पर एक नज़र डालें।

आदिवासी समूहों की भाषा :

सुदूर इलाकों में बसे कुछ विशेष आदिवासी समूह अपनी एक विशेष भाषा का ही प्रयोग करते हैं। जैसे- उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में बसने वाले सौरा आदिवासी समूह के लोग सौरा भाषा का प्रयोग करते हैं।

भाषाओं का मिला जुला रूप :

भाषाओं पर एक-दूसरे का प्रभाव देखने को मिलता है और इस कारण किसी एक भाषा का लेबल देना मुश्किल होता है।जैसे- छत्तीसगढ़ में महासमुंद जिले के सरायपाली और बसना विकासखंडों की सीमाएँ उड़ीसा के बरगढ़ जिले की सीमा को छूती हैं, जहाँ संबलपुरी भाषा प्रयोग की जाती है। इस कारण सरायपाली और बसना की छत्तीसगढ़ी में संबलपुरी के बहुत से शब्द आते हैं।

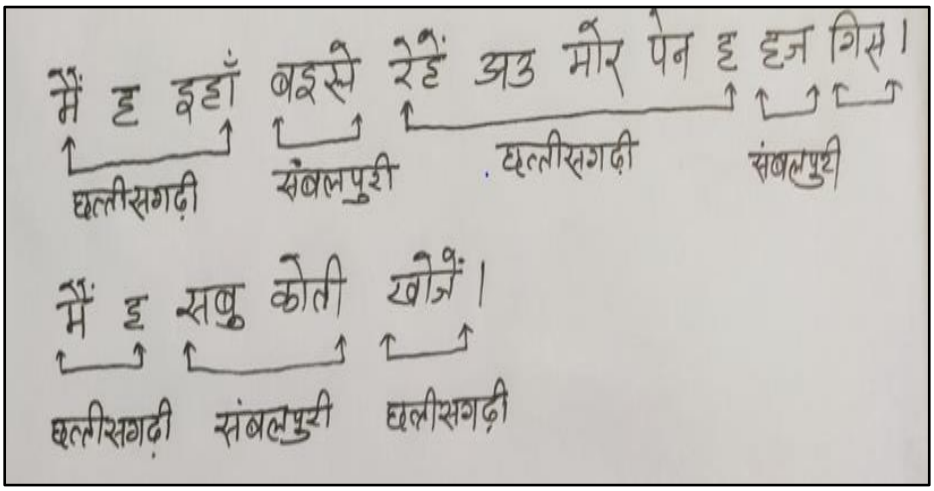

चित्र 1 : छत्तीसगढ़ी और संबलपुरी भाषा का मिलाजुला रूप

राजस्थान के डूंगरपुर जिले में बोली जाने वाली वागड़ी भाषा पर भी गुजराती, मेवाड़ी और हिंदी का प्रभाव देखा जा सकता है।

एक भाषा के अलग-अलग रूप :

एक ही भाषा के अलग-अलग प्रकार या रुप पाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश में गोंडी भाषा के अलग-अलग रूप बोले जाते हैं। मध्य छत्तीसगढ़ में ही लगभग 5 अलग-अलग प्रकार की छत्तीसगढ़ी बोली जाती है।

लिंक या संपर्क भाषा :

जब किसी क्षेत्र में अलग-अलग भाषा संबंधी समुदाय के लोग साथ मिल-जुलकर रहते हैं, तो ऐसे में वे आपसी व्यवहार और कामकाज के लिए किसी लिंक या

संपर्क भाषा का प्रयोग करते हैं। यह संपर्क भाषा या तो उस क्षेत्र की भाषाओं का मिश्रण होती है, या एक अन्य भाषा भी हो सकती है। उदाहरण के लिए असम में चाय के बगीचों में काम करने वाले आदिवासी समूहों के घर की भाषा मुंडारी, कुड़ुख या संथाली हो सकती है, परन्तु इन समुदायों के बीच संपर्क की भाषा सादरी है।

बच्चों पर भाषा संबंधी अंतर का दुष्प्रभाव

गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें (Text - Blog)

(7_7_hin_activity1_share_your_reflection)

गतिविधि 1 : अपनी समझ साझा करें

विश्व बैंक के अनुसार संसार में 37% बच्चे ऐसी भाषा में पढ़ने-लिखने के लिए मजबूर हैं जिसे न वे बोलते हैं, न समझते हैं। आपके विचार से इन बच्चों को किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा?

चरण राज्यों द्वारा निर्मित किए जाएंगे।

अपरिचित भाषा और बच्चों की दुविधा(Text)

(7_8_hin_unfamiliar_language_and_children_dilemma)

अपरिचित भाषा और बच्चों की दुविधा

एक शिक्षक के तौर पर हमारे लिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारी कक्षाओं के बच्चे अलग-अलग भाषा संबंधी परिवेश से आते हैं, पर अक्सर उन्हें अपनी भाषा में शिक्षण की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाती है।

भारत में इतनी भाषा संबंधी विविधता होने के बावजूद स्कूलों में शिक्षण का माध्यम केवल 36 भाषाएँ ही हैं।

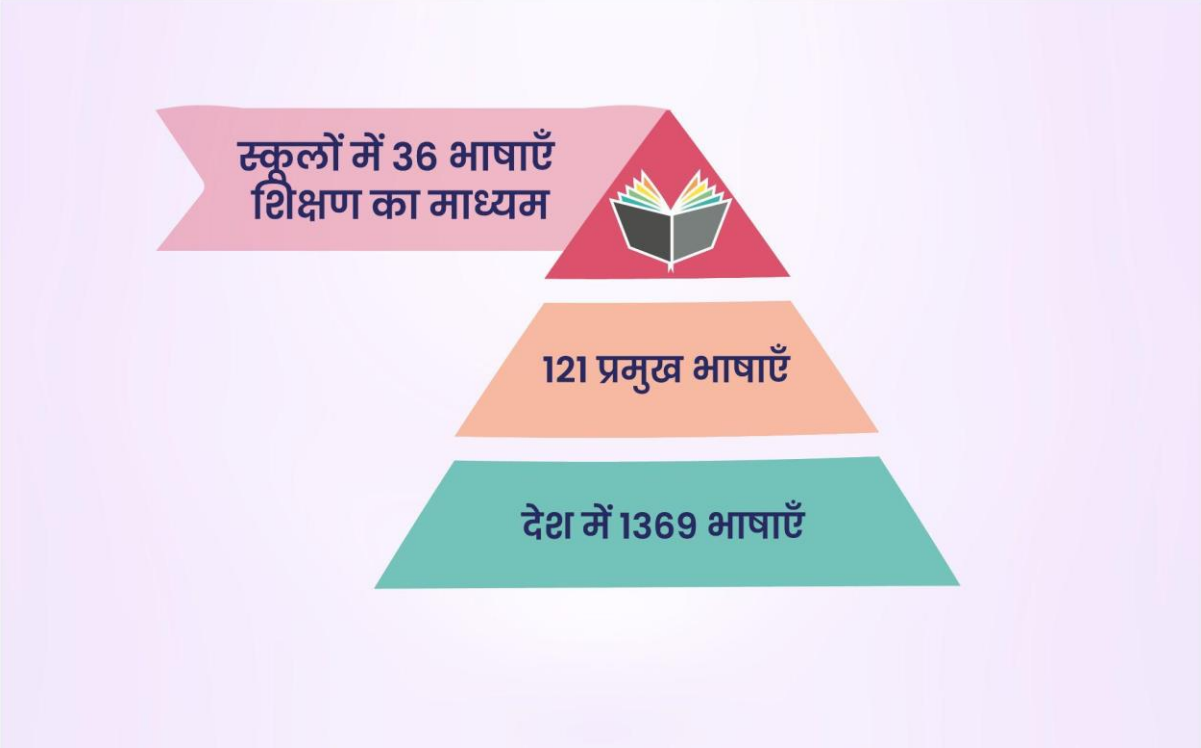

चित्र 2 : भारत में 36 भाषाओं में शिक्षण की सुविधा उपलब्ध (UDISE, 2019-2020)

बहुत सारे बच्चों की भाषाओं को कक्षा में जगह नहीं मिलती; और उनकी शिक्षा बहुत हद तक या पूरी तरह एक अपरिचित भाषा में ही होती है। उदाहरण के लिए राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मगधी, हरियाणवी आदि भाषाएँ हमारे देश में करोड़ों लोगों द्वारा बोली जाती हैं, फिर भी इन भाषाओं को स्कूलों में शिक्षण के माध्यम के रूप में जगह नहीं मिल पायी है।

एक मोटे आकलन से पता चलता है कि हमारे देश के प्राथमिक स्कूलों में लगभग 25% बच्चे घर और स्कूल की भाषा में अंतर होने के कारण आरंभिक वर्षों में गंभीर चुनौतियों का सामना करते हैं।

अपरिचित भाषा के कारण क्षति उठाने वाले बच्चों को हम मुख्यतः 5 श्रेणियों के आधार पर समझ सकते हैं।

1. अनुसूचित जनजाति वर्ग के बच्चे, विशेष रूप से वे बच्चे जो सुदूर आदिवासी या जनजाति बहुल इलाकों में रहते हैं और घरों में अपनी मातृभाषा का प्रयोग ही करते हैं।
2. ऐसे बच्चे जो किसी ऐसे राज्य में रहते हैं, जिसकी प्रमुख भाषा उनकी अपनी भाषा से अलग है और ऐसे बच्चे जो अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों पर रहने के कारण किसी अन्य भाषा में पढ़ रहे हैं।
3. वे बच्चे जो कोई ऐसी स्थानीय भाषा बोलते हैं जिसे वहाँ की स्कूली (मानक) भाषा की एक 'बोली' माना जाता है! जैसे, छत्तीसगढ़ी, वागड़ी, बुंदेली, मारवाड़ी, भोजपुरी आदि को हिंदी भाषा की ही बोली माना गया है।
4. ऐसे बच्चे जिनकी भाषा लिखित, साहित्य आदि के रूप में पर्याप्त रूप से विकसित है, फिर भी शिक्षा के माध्यम के रूप में उनका प्रयोग नहीं किया जाता। यह एक बहुत बड़ी श्रेणी है जिसमें कश्मीरी, कोंकणी, डोगरी आदि बहुत सी भाषाएँ शामिल हैं।
5. ऐसे बच्चे जो अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने के लिए विवश हैं, पर स्कूल के बाहर उन्हें अंग्रेजी भाषा बोलने-सुनने को नहीं मिलती। इस श्रेणी में हमारे देश के अनेकों बच्चे पाए जाते हैं।

फलस्वरूप, ये बच्चे अपने आरंभिक वर्षों में एक ऐसी भाषा में सीखने के लिए मजबूर हो जाते हैं जो वे न तो बोलते हैं और न ही समझते हैं। इस कारण ये बच्चे कक्षा में अपमानित, लाचार और डरा हुआ महसूस करते हैं और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सार्थक रूप से नहीं जुड़ पाते। इससे उनकी पहचान और आत्मविश्वास को भी भारी चोट पहुँचती है, जिसके कारण उनका शैक्षिक प्रदर्शन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।

अतः बतौर शिक्षक हमारे लिए यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे बच्चों की भाषा और स्कूल की भाषा में कितना अंतर है, ताकि उसके अनुसार शिक्षण प्रक्रिया को तराशा जा सके। आइये, इसके लिए एक छोटी सी गतिविधि करते हैं।

गतिविधि 2 : अपनी समझ साझा करें (Text - Blog)

(7_9_hin_activity2_share_your_thoughts**)**

गतिविधि 2 : मेरी कक्षा की भाषा संबंधी परिस्थिति - अपनी समझ साझा करें

आपकी कक्षा के बच्चे जो भाषा/भाषाएँ दैनिक जीवन में सहज रूप से बोलते-समझते हैं, वह पाठ्यपुस्तकों में लिखी गई भाषा से किस प्रकार अलग है? लगभग 100 शब्दों में अपना उत्तर लिखें और उदाहरण के साथ समझाएँ।

चरण राज्यों द्वारा निर्मित किए जाएंगे।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की परिचित भाषा के उपयोग का महत्त्व

कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे? (Video)

(7_10_hin_using_children's_language_in_the_classroom_why_and_how)

कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे? - प्रतिलिपि (Text)

(7_11_hin_using_children's_language_in_the_classroom_why_and_how_transcript)

कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग – क्यों और कैसे? - प्रतिलिपि

साथियो,

आइये इस कोर्स के अगले पड़ाव की ओर चलते हैं और ये समझते हैं कि कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग इतना महत्वपूर्ण क्यों है! इस पर चर्चा शुरू करने से पहले मैं आपको एक वीडियो दिखाना चाहूँगा। इस वीडियो में दो शिक्षकों की कक्षाओं का विवरण है। दोनों कक्षाओं में आपको सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कुछ मूलभूत अंतर दिखेंगे। इसके क्या कारण हो सकते हैं? क्या बच्चों की समझ की भाषा के प्रयोग की इसमें कोई भूमिका है? आइए, इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने के लिए इस वीडियो को ध्यानपूर्वक देखते हैं।

वाचक : 'कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग क्यों और कैसे' के इस वीडियो में आपका स्वागत है। आइए चलते हैं जीवन लाल जी की कक्षा में। यह बहुत मेहनती शिक्षक हैं। वह ओडिशा की सीमा से लगे हुए छत्तीसगढ़ के एक स्कूल में पढ़ाते हैं। जहाँ कुछ बच्चे छत्तीसगढ़ी और कुछ संबलपुरी बोलते हैं और अपनी

कक्षा में अलग-अलग तरह की शिक्षण सामग्री और विभिन्न गतिविधियों का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन इनकी समस्या यह है कि बहुत मेहनत करने के बाद भी उनकी कक्षा में बच्चों की भागीदारी बहुत कम है और परीक्षा में बच्चों का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा नहीं है। जीवन लाल जी का मानना है कि बच्चों को घर की भाषा का कक्षा में बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे हिंदी नहीं सीख पाएँगे और पीछे छूट जाएँगे। उनकी शिक्षण प्रक्रिया इसी मान्यता के इर्द-गिर्द घूमती है। आइए, देखते हैं यह अपनी कक्षा में किस तरह से काम करते हैं।

जीवनलाल जी : बच्चों, आज हम इस चित्र पर बात करेंगे। मैं इस चित्र से संबंधित कुछ सवाल आपसे करूँगा। उसका जवाब जिसे पता होगा वह पहले हाथ ऊपर करेगा और फिर जिससे मैं कहूंगा वो जवाब देगा। जवाब हिंदी में देना सभी, ठीक है? बच्चों, बताओ इस चित्र में क्या दिखाई दे रहा है? बताओ बेटा चुलेश्वरी।

चुलेश्वरी : सर, ये एक ठन रुख ए। (सर, यह तो एक पेड़ है।)

जीवनलाल जी : 'ठन' और 'रुख' क्या होता है? कोई और बताओ!

बच्चा : सर, इटा त गच आय। (सर, यह तो एक पेड़ है।)

जीवनलाल जी : तुम भी गलत बोल रहे हो! चित्र को ध्यान से देखो। यह एक पेड़ है। मैंने पहले भी बताया था कि जवाब हिंदी में ही देना है। ठीक है बच्चों, फिर से कोशिश करते हैं। इस पेड़ पर कौन सा फल लगा है? बेटा रतना, तुम बताओ?

रतना : सर, आम त आय। (सर, आम तो है।)

जीवनलाल जी : फिर से वही बात! कमलेश, तुम बोलो।

कमलेश : पाचला लेती त आय सर। (सर, पका हुआ आम ही तो है।)

जीवनलाल जी : ओ हो! चुप हो जाओ सभी। इस पेड़ पर आम के फल लगे हैं। बार-बार इतना मना करने पर भी पता नहीं क्यों तुम लोग मिली जुली भाषा का प्रयोग कर रहे हो। अच्छा चलो छोड़ो! विस्तार से बताओ कि आम के पेड़ से हमें क्या-क्या लाभ होते हैं?

वाचक : इस सवाल के जवाब में न ही किसी बच्चे ने हाथ ऊपर उठाया और ना ही किसी ने जीवन लाल जी से नज़रें मिलायी। क्योंकि पिछले सवालों को तो वे जैसे तैसे अनुमान लगाकर समझ गए थे, पर यह सवाल तो उनके सिर के ऊपर से ही निकाल गया था। जीवन लाल जी ने उस प्रश्न को थोड़ा सरल बना कर पूछा।

जीवनलाल जी : यह बताओ कि आम के पेड़ से क्या क्या लाभ होते हैं?

वाचक : यह सवाल सुनकर बच्चे घबरा गए क्योंकि उन्हें पता था कि उनका जवाब गलत ही होने वाला है। बच्चे अपने ज्ञान को हिंदी में अभिव्यक्त करने के लिए सक्षम नहीं हैं।

बच्चा : मुई त जानु छे, लेकिन कहेबार के डर लागू छे। (मुझे तो मालूम है, लेकिन बोलने से डर लग रहा है।)

बच्चा : मुई त जानु छे गा। (मुझे तो मालूम है।)

वाचक : जीवन लाल जी को लगा कि इस सवाल का जवाब बच्चों को नहीं पता इसलिए वे चुप रहे। इसलिए उन्होंने स्वयं ही आम के पेड़ के सभी लाभों और अंगों के बारे में विस्तार से हिंदी में बताया और फिर निराश होकर कक्षा से बाहर चले गए। इस तरह आम के पेड़ पर चर्चा संपन्न हुई।

आइए, अब महिमा जी की कक्षा देखते हैं। गरियाबंद जिले में छुरा ब्लॉक के शासकीय प्राथमिक शाला रसेला में, महिमा जी 2009 से कक्षा पहली को पढ़ा रही हैं। छत्तीसगढ़ का यह गाँव ओडिशा राज्य से लगा हुआ है इसलिए यहाँ

ओडिशा की भाषा, रीति-रिवाज, खान-पान, रहन-सहन आदि का प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है। महिमा जी की कक्षा में कुछ बच्चे संबलपुरी और कुछ बच्चे छत्तीसगढ़ी बोलते व समझते हैं। आइए, महिमा मैडम की एक दिन की कक्षा का अवलोकन करते हैं। महिमा मैडम बच्चों को कक्षा पहली की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक का पाठ 17, 'बंदर और गिलहरी' पढ़ा रही हैं।

महिमा जी : बच्चों, आज हम यह कहानी पढ़ेंगे। बताओ इस चित्र में तुम्हें क्या-क्या दिख रहा है? इनके नाम बताओ?

बच्चा : चिर्रमूसा (गिलहरी)

अन्य बच्चा : बेंदरा अऊ गच (बंदर और पेड़)

बच्चा : रुख म बेन्द्ररा सुते है। (पेड़ पर बंदर सो रहा है।)

महिमा जी : अच्छा तो चिर्रमूसा क्या कर रहा है?

बच्चा : चिर्रमूसा माकर की पूंछी को धर के ऐसे खींच रही है। (गिलहरी बंदर की पूँछ को पकड़कर खींच रही है।)

महिमा जी : अच्छा तो ऐसा करने पर माकर क्या करेगा?

बच्ची : ओला फटकारही की झन कर। (उसे डाँटेगा कि ऐसा मत करो।)

बच्चा : उस पर माकर गुस्सा करेगा। (उस पर बंदर गुस्सा करेगा।)

बच्चा : माकर ताके हुरबा (बंदर उसको डाँटेगा)

महिमा जी : के काजे गुस्सा करबा माकर ताके? (बंदर क्यों उस पर नाराज़ होगा?)

बच्चा : क्योंकि उसका लेंज को खींचने से उसको दुख रहा है, तो माकर उसको गुस्सा करेगा। (क्योंकि उसकी पूँछ को पकड़कर खींचने से उसे दर्द हो रहा है, इसलिए बंदर उस पर नाराज़ होगा।)

बच्चा : नहीं, ओ कुछ नहीं करेगा को सुते रहेगा तो चिर्रमूसा चुपचाप गच में चग जाएगा। (नहीं, बंदर कुछ नहीं करेगा, बंदर सोता रहेगा और गिलहरी चुपचाप पेड़ पर चढ़ जाएगी।)

महिमा जी : माकर की लेंज, यानि बेंदरा की पूँछ कितनी लंबी रही होगी कि ज़मीन तक लटक रही थी?

सभी बच्चे एक साथ : तार जतका लंबा...

सूता जितना लंबा...

डोर जतका लंबा...

आसमान जितना लंबा...

बाँस जितना लंबा...

बरगच जितना लंबा...

महिमा जी : अच्छा, यह बात है! तो चलो कहानी पढ़कर देखते हैं कि सच में कहानी में आगे क्या हुआ होगा।

वाचक : सब बच्चे बड़े उत्साह से कहानी में आगे की घटना सुनने के लिए मैडम के पास आकर बैठ गए।

महिमा जी : तो ध्यान से सुनो, मैं कहानी पढ़कर तुम्हें सुना रही हूँ। इस पाठ का नाम है 'बंदर और गिलहरी'।

वाचक : फिर पाठ के एक एक चित्र पर उँगली रखकर उन्होंने बताना शुरू किया।

महिमा जी : यह बंदर है और यह गिलहरी है। और जैसा कि गोवर्धन ने बताया था कि बंदर गच यानी पेड़ पर सो रहा है। तो देखो बंदर आराम से पेड़ पर लेटा हुआ है। तुम भी करके दिखाओ, कैसे लेटा है बंदर?

वाचक : कुछ बच्चे बंदर की नकल करते हुए अपने दोनों हाथ सिर के पीछे रखकर लेट गए तो कुछ बच्चे ज़मीन पर उसी मुद्रा में लेटते हुए बंदर की नकल करके बताने लगे।

अब तक आपने जीवन लाल जी और महिमा जी दोनों की कक्षा को देखा। इस दौरान आप समझ चुके होंगे कि दोनों कक्षाओ में कुछ मूल अंतर थे। इस अंतर का मुख्य कारण यह था कि जीवन लाल की कक्षा में बच्चों की भाषा के प्रयोग के लिए कोई जगह नहीं थी। इसके ठीक विपरीत महिमा जी की कक्षा में बच्चों की भाषा को भरपूर स्थान दिया जाता था। आइए, हम एक बार पुनः एक नज़र डालें कि इन दोनों कक्षाओं में हमें कौन-कौन से मूल अंतर देखने को मिले।

जीवन लाल जी की कक्षा :

- बच्चों की कोई भागीदारी नहीं।
- बच्चों के चेहरों पर न समझ पाने और डर या झिझक के भाव।
- उच्च स्तरीय चिंतन, कल्पना और अनुमान लगाने के कोई अवसर नहीं।
- कक्षा में डर व झिझक का माहौल ।
- बच्चों का अपने विचारों और भावनाओं को बिल्कुल भी साझा नहीं कर पाना।
- शिक्षक केंद्रित कक्षा।

महिमा जी की कक्षा :

- बच्चों की सक्रिय भागीदारी।
- बच्चों के चेहरों पर आत्मविश्वास के भाव।

- कक्षा में उच्च स्तरीय चिंतन, कल्पना और अनुमान लगाने के भरपूर अवसर।
- कक्षा में प्रेमपूर्ण और सीखने के लिए उत्साह का माहौल।
- बच्चों को अपने विचारों व भावनाओं को उत्साह के साथ साझा करना।
- बाल केंद्रित कक्षा।

इस वीडियो के माध्यम से हमने यह समझा कि कक्षा में बच्चों की भाषा का खुलकर प्रयोग करना कितना आवश्यक और महत्वपूर्ण है!

<u>आरंभिक कक्षाओं में बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग का महत्व</u> (Text)

(7_12_hin_importance_of_using_mother_tongue_in_foundational_classes)

आरंभिक कक्षाओं में बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग का महत्व

"शिक्षा में भाषा ही सब कुछ नहीं है, लेकिन भाषा के बिना शिक्षा में सब कुछ, कुछ भी नहीं है " (Wolff, 2006)

"जब बच्चे भाषा सीखते हैं तो वे बहुत सारे विषयों में से सिर्फ़ एक विषय नहीं सीख रहे होते हैं; बल्कि वे सीखने की आधारशिला सीख रहे होते हैं " (Halliday, 1993)

आपने वीडियो में स्पष्ट तौर पर देखा कि जब शिक्षण में बच्चों की समझ की भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो उसके बहुत से लाभ देखने को मिलते हैं।

दरअसल, भाषा केवल अपनी बात कहने का ही नहीं, बल्कि सीखने, सोचने और समझने का भी साधन है। भाषा, सीखने की सभी प्रक्रियाओं में मदद करती है।

भाषा, शिक्षा और सीखने-सिखाने की सभी प्रक्रियाओं के केंद्र में है। बच्चे अन्य लोगों से बातचीत कर, उन्हें सुनकर, पढ़कर, सवाल पूछकर, तर्क-वितर्क, विश्लेषण कर, समूह में काम कर या एक-दूसरे के साथ कल्पना भरी बातें कर विभिन्न चीज़ों के बारे में अपनी समझ बनाते हैं।

यदि बच्चों को स्कूल में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा बोलनी और समझनी न आती हो, तो उनके लिए स्कूली शिक्षा से जुड़ना असंभव हो जाता है। बच्चों की समझ की भाषा का शिक्षण प्रक्रिया में इस्तेमाल करना अनिवार्य है।

1. **घर की भाषा / समझ की भाषा / परिचित भाषा / मातृभाषा / L1** की मदद से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की **सक्रिय भागीदारी** सुनिश्चित हो पाती है और कक्षा **बाल-केंद्रित** बनती है।
2. L1 की मदद से बच्चों के लिये कुछ भी **सोचना, समझना, कल्पना करना, उच्चस्तरीय चिंतन** का काम करना और खुद को **अभिव्यक्त** करना आसान हो जाता है।
3. L1 की मदद से बच्चों के **अनुभवों और पूर्व-ज्ञान को स्कूल के ज्ञान से जोड़ना सहज** होता है, जो नए ज्ञान की रचना में मदद करता है। एनसीएफ 2005 भी कहता है कि सीखने की प्रक्रिया में ज्ञात से अज्ञात या परिचित से अपरिचित की ओर ही बढ़ना चाहिए।
4. कक्षा में शिक्षण के लिए बच्चों की घर की भाषा का इस्तेमाल करने से उनका **आत्मसम्मान** और **आत्मविश्वास** बढ़ता है और **शिक्षक से उनका रिश्ता** भी अधिक आत्मीय और सहज बन पाता है। बच्चों में ऐसी **सकारात्मक भावनाएँ** उनको शिक्षण प्रक्रिया में बहुत अच्छी तरह जोड़ती हैं। विभिन्न शोध भी इसी बात की पुष्टि करते हैं कि आत्मसमान,

विश्वास, भावनात्मक सुरक्षा और प्यार से भरा हुआ माहौल बच्चों को बेहतर सीखने-समझने में मदद करता है।

“स्कूल में किसी बच्चे की भाषा को ख़ारिज करना बच्चे को खारिज़ करने के बराबर है।” - जिम कमिन्स

5. मातृभाषा में शिक्षण से **सभी विषयों में बच्चों की समझ बढ़ती है**, सीखने का स्तर बेहतर होता है और अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। देश-विदेश में हुए अनेकों अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं।

- **भारत में हुए अध्ययन :** आदिवासी बच्चों की पढ़ाई यदि उनकी अपनी भाषा में होती है, तो उनका भाषा और गणित में प्रदर्शन उन बच्चों से बेहतर होता है जो स्कूल में किसी अपरिचित भाषा / कम परिचित भाषा / L2 के माध्यम से पढ़ते हैं।
- **इथियोपिया में किया गया एक बड़ा अध्ययन :** जिन बच्चों ने अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त की थी, उन्होंने कक्षा-8 के गणित, जीवविज्ञान, रसायनशास्त्र और भौतिकी आदि विषयों में उन बच्चों से कहीं बेहतर प्रदर्शन किया जिनकी पढ़ाई एक अनजान भाषा में हुई थी।

- **यूएसए में लगभग 10 वर्षों तक किया गया अध्ययन :** बच्चों की शैक्षिक सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारक है –प्रारंभ के अधिक से अधिक वर्षों तक बच्चों के घर की भाषा में शिक्षण।

6. आम मान्यता के विपरीत, **मातृभाषा की मज़बूत नींव बच्चों को अन्य भाषाएँ सीखने में मदद** करती है।

<u>गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें</u> (DIKSHA Activity)

(7_13_hin_activity3_check_your_understanding)

https://diksha.gov.in/play/content/do_31343044237330841619 79

गतिविधि 3 : अपनी समझ की जाँच करें

1. शिक्षण में L1 का इस्तेमाल करने से बच्चों के भाषा संबंधी कौशल तो बेहतर होते हैं, पर अन्य विषयों में अकादमिक उपलब्धि नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। **(गलत)**
2. यदि कक्षा में केवल स्कूल की भाषा का प्रयोग किया जाता है और बच्चों की मातृभाषा का प्रयोग वर्जित किया जाता है, तो बच्चों का आत्मविश्वास बेहतर होता है। **(गलत)**
3. यदि बच्चों की अपनी मातृभाषा पर बेहतर पकड़ बनेगी, तो उनको अन्य भाषाएँ सीखने में भी मदद मिलेगी। **(सही)**

<u>बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?</u> **(**Video)

(7_14_hin_how_does_childrens_language_help_them_learn_another_language)

<u>बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?-</u>

<u>प्रतिलिपि</u> (Text)

(7_15_hin_how_does_childrens_language_help_them_learn_another_language_transcript)

बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?- प्रतिलिपि

क्या बच्चों की घर की भाषा उन्हें अन्य भाषाएँ सीखने में मदद कर सकती है? हममें से अधिकतर साथी ये मानते हैं कि अगर कक्षा में बच्चों की भाषा का प्रयोग अधिक किया गया तो बच्चों को स्कूल की भाषा अथवा अंग्रेज़ी सीखने में परेशानी होगी या अन्य भाषाओं को सीखने के लिए समय नहीं बचेगा। दरअसल यह एक भ्रांति है। सच तो यह है कि परिचित भाषा की मज़बूत बुनियाद बच्चों को अन्य भाषाएँ सीखने में रुकावट नहीं डालती, बल्कि सकारात्मक रूप से मदद करती है।

इस विषय पर शोध या विज्ञान-आधारित सच प्रस्तुत करने के लिए मैं आपको एक वीडियो दिखाना चाहूँगा जिससे आप यह समझ पाएंगे कि परिचित भाषा अच्छी तरह सीखने से अन्य भाषाएँ सीखने में किस प्रकार मदद मिलती है। आइए, इस वीडियो को देखते हैं।

वाचक : 'बच्चों की भाषा उन्हें दूसरी भाषा सीखने में कैसे मदद करती है?' के ई-लर्निंग वीडियो में आपका स्वागत है।

शिक्षिका 1 : अरे, क्या तुमने यह न्यूज़ देखी?

न्यूज : कक्षा में मातृभाषा बोलने पर बच्चों को मिली कड़ी सज़ा

शिक्षिका 1 : मुझे तो यह न्यूज़ देखकर बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। बहुत दु:ख हुआ।

शिक्षिका 2 : हाँ, तुम ठीक कह रहे हो। यह तरीका तो बिल्कुल गलत है। लेकिन मेरे ख्याल से यह करना भी ज़रूरी है। नहीं तो ये बच्चे अंग्रेज़ी कैसे सीखेंगे। मैं भी अपनी कक्षा में बच्चों को वागड़ी में बिल्कुल बात नहीं करने देती। हाँ, पर ऐसे सज़ा नहीं देती। मैं बस उनको बोलती हूँ कि हिंदी में ही बात करें। वागड़ी स्कूल में बोलने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि अगर पूरे टाइम अपनी ही भाषा बोलते रहेंगे तो हिंदी या अंग्रेज़ी कब सीखेंगे भला! वह भी तो ज़रूरी है कि नहीं।

शिक्षिका 1 : हम्म, मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ। यह तो बिल्कुल ठीक बात है कि बच्चों को हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों ही आनी ज़रूरी है, लेकिन यहाँ पर एक गलतफ़हमी है जिस पर मैं चाहती हूँ कि तुम ध्यान दो। और वह यह है कि हम लोगों को लगता है कि हम जितनी जल्दी बच्चों को दूसरी भाषा में पढ़ाने लग जाएंगे और जितना ज्यादा मातृभाषा के इस्तेमाल पर रोक लगाएंगे, बच्चे उतने ही बेहतर रूप से दूसरी भाषाओं को सीख पाएँगे। पर होता उल्टा है! न बच्चे अपनी भाषा में निपुण हो पाते हैं और न ही दूसरी भाषा सीख पाते हैं।

शिक्षिका 2 : तुम्हारे कहने का मतलब है कि ऐसे सोचना ठीक नहीं है। ऐसे कैसे? भला मातृभाषा का दूसरी भाषाओं से क्या संबंध? और वैसे भी अगर हमारा दिमाग पूरी ताकत और समय मातृभाषा में लगा देगा तो दूसरी भाषाओं के लिए दिमाग में जगह कहाँ बचेगी?

शिक्षिका 1 : यही तो सबसे बड़ी गलतफ़हमी है। यह एक बहुत बड़ी भ्रांति है जिसमें माना जाता है कि मानव मस्तिष्क में अलग-अलग भाषाएँ अलग-अलग

गुब्बारों की तरह अपनी जगह बनाती हैं और यदि मातृभाषा का गुब्बारा बड़ा हो गया तो अन्य भाषाओं के लिए जगह नहीं बचेगी। मतलब यदि बच्चों के घर की भाषा में लंबे समय तक सीखने-सिखाने का काम किया गया, तो हिंदी या अंग्रेज़ी सीखने का समय नहीं बचेगा और बच्चों का नुकसान होगा। यह मान्यता पूरी तरह से गलत है बच्चों के घर की भाषा के लिए मस्तिष्क में ज़्यादा जगह और कक्षा में समय देने से अन्य भाषाओं के लिए मस्तिष्क में जगह कम रह जाती है। दरअसल भाषा से जुड़े ऐसे बहुत से कौशल हैं, जो अलग-अलग भाषाओं में भी एक समान ही होते हैं और यदि वे मातृभाषा में ठीक प्रकार से विकसित हो जाते हैं, तो अन्य भाषाओं पर भी पकड़ बनाने में बहुत मददगार साबित होते हैं।

शिक्षिका 2 : अच्छा! मुझे तो यह बात मालूम ही नहीं थी। क्या तुम मुझे बता सकती हो कि ये कौन से कौशल हैं जो अलग-अलग भाषाओं में भी एक समान ही होते हैं और एक भाषा में सीखने पर दूसरी भाषा में भी मदद करते हैं।

शिक्षिका 1 : बिल्कुल! चलो अपने एलएलएफ के यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो देखते हैं। उससे तुम्हें यह बात समझने में बहुत मदद मिलेगी।

यूट्यूब वीडियो : इस वीडियो में हम यह समझेंगे कि बच्चों की मातृभाषा उन्हें अन्य भाषाएँ सीखने में कैसे मदद करती हैं? साझा अंतर्निहित निपुणता का सिद्धांत, जिम कमिन्स द्वारा दिया गया है। ऊपरी तौर पर तो सभी भाषाएं एक दूसरे से बहुत अलग दिखाई देती हैं। यह अंतर शब्द भंडार, वाक्यों की बनावट, व्याकरण और बोलने के तरीके या लहज़े में नज़र आते हैं। यह अंतर हमें बच्चों की मातृभाषा और स्कूल की भाषा में भी दिखाई देता है। पर जैसे कि हमें पता है कि भाषा सिर्फ बोलने और सुनने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि सोचने, समझने और सीखने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। आपको यह जानकर बहुत आश्चर्य

होगा कि सोचने-समझने से जुड़े ऐसे बहुत से कौशल या क्षमताएं हैं जो अलग-अलग भाषाओं में भी एक जैसी ही होती है। ऐसे साझा कौशलों या क्षमताओं को साझा अंतर्निहित निपुणता के नाम से जाना जाता है। आइए देखते हैं, ये कौन-कौन से कौशल हैं जो एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित होते हैं : अवधारणात्मक ज्ञान, पढ़ने-लिखने से संबंधित कौशल, उच्च-स्तरीय चिंतन कौशल। यदि बच्चों ने अपनी भाषा में किसी अवधारणा को सीख लिया है, तो उन्हें हिन्दी या अंग्रेज़ी में दोबारा सीखना नहीं पड़ता, उन्हें केवल नई भाषा में उसे क्या कहते हैं यह जानना भर होता है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चों को पहले से अपनी भाषा में बरगद के पेड़ के बारे में मालूम हो तो उन्हें हिंदी भाषा में बरगद के पेड़ के रूप, रंग और उसकी विशेषताओं के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं होगी। बल्कि उन्हें केवल यह बताने की ज़रूरत होगी कि जिसे तुम अपनी भाषा, छत्तीसगढ़ी में, 'बर रुख' कहते हो, उसे ही हिन्दी में 'बरगद पेड़' कहते हैं। अर्थात, उन्हें केवल उसके नाम भर को बताने की ज़रूरत होगी, फिर वे उसके संबंध में अपनी भाषा में ज्ञात और अर्जित किए गए सारे ज्ञान को उस नाम के साथ दूसरी भाषा में ट्रांसफर (अंतरित) कर लेंगे।

पढ़ने-लिखने से संबंधित भी कई ऐसे कौशल हैं जो एक बार ही सीखने पड़ते हैं, अलग-अलग भाषाओं में बार-बार नहीं। और ये सभी कौशल अपनी परिचित या मज़बूत भाषा में ही सबसे अच्छी तरह से सीखे जा सकते हैं, ऐसा तमाम शोध बताते हैं। मातृभाषा में इन्हें सीख लेने पर दूसरी भाषा में इन्हें सीखना बहुत सरल हो जाता है। ये कौशल हैं : ध्वनि जागरूकता, ध्वनियों और अक्षरों के संबंध को समझना, विराम चिह्नों की समझ, बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ना, लेखों या पाठों के विभिन्न प्रकारों की समझ होना, संदर्भ से अनुमान लगाना।

ध्वनि जागरूकता का मतलब है यह समझना कि वाक्यों में कई शब्द होते हैं और हर शब्द अलग-अलग ध्वनियों से मिलकर बना होता है। यदि बच्चे अपनी भाषा के शब्दों की ध्वनियों को जोड़ व तोड़ लेते हैं तो हिंदी या अंग्रेज़ी भाषाओं में ये करना उनके लिए बहुत आसान हो जाता है।

वाक्य स्तर : “आज मय ह खेले बर जाहूँ।"

वर्ण स्तर : “आ ज म य ह खे ले ब र जा हूँ"

ध्वनियों और अक्षरों के संबंध को समझना मतलब यह समझना है कि हर ध्वनि का एक चिह्न या अक्षर होता है। जैसे ‘प’ ध्वनि को हम हिंदी में /प/ से दिखाते हैं। आपकी भाषा में उसे कैसे दिखाते होंगे?

विराम चिह्नों की समझ का मतलब यह समझना कि हर भाषा में वाक्य होते हैं जो पूर्ण विराम या किसी अन्य चिह्न के साथ खत्म होते हैं। अंग्रेज़ी भाषा में कैसे मालूम पड़ता है कि वाक्य खत्म हो गया?

बाएँ से दाएँ पढ़ना का मतलब यह समझ विकसित होना है कि किसी भी पाठ को बाएँ से दाएँ की ओर पढ़ा या लिखा जाता है और यह आत्मसात कर लेना कि पढ़ने या लिखने के दौरान हमारी उँगलियाँ और आँखें बाएँ से दाएँ की ओर जाती हैं। क्या आप किसी ऐसी भाषा के बारे में जानते हैं जो इससे अलग तरह से पढ़ी और लिखी जाती हो?

लेखों या पाठों के विभिन्न प्रकारों की समझ का मतलब यह समझ पाना है कि भाषा कोई भी हो, उसमें बात को कहने के लिए अलग-अलग तरीके होते हैं। निबंध, सूचनात्मक लेख, पोस्टर, समाचार, आर्टिकल आदि। उनकी लेखन शैली को ध्यान में रखते हुए उस पाठ का अर्थ समझना एक ऐसा कौशल है जो आसानी से एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित हो जाता है।

संदर्भ से अनुमान लगाना का मतलब यह समझ पाना कि कहानी के कवर पेज या नाम से कहानी में क्या होगा, उसका अनुमान लगाया जा सकता है या आसपास दिए हुए चित्रों या आसपास के वाक्यों से किसी शब्द के अर्थ का अनुमान लगाया जा सकता है। ये अनुमान आप अलग-अलग भाषाओं में भी एक ही तरीके से लगाते हैं।

उच्च स्तरीय चिंतन कौशल, भाषा के साझा कौशलों में यह सबसे महत्वपूर्ण कौशल है। ये मुख्यतः पाठ आधारित समझ और सोच-विचार से जुड़े कौशल हैं जो एक बार आपने अपनी मातृभाषा में अच्छे से सीख लिए तो दूसरी भाषा में ये बहुत सरलता से प्रयोग किए जा सकते हैं। आपको नई भाषा में केवल उस भाषा के शब्द सीखने होंगे। सोच-विचार के कौशल सिरे से नहीं सीखने होंगे। आइए, इनको समझें।

3.1 किसी पढ़ी या सुनी हुई कहानी या लेख के मुख्य विचार को बता पाना।

3.2 किसी पाठ का सारांश बता पाना।

3.3 पात्रों, वस्तुओं या घटनाओं में समानता और अंतर खोज पाना। जैसे, दिए गए चित्रों में बच्चे आपस में चर्चा करते हुए अंतर खोज रहे हैं।

3.4 किसी विषय पर तर्क-वितर्क कर पाना और कारण सहित अपना पक्ष रख पाना।

ये सभी कौशल यदि अपनी मज़बूत भाषा में भली प्रकार से सीख लिए जाते हैं तो दूसरी भाषा में सीखने के लिए एक मज़बूत नींव का काम करते हैं, क्योंकि दूसरी भाषा के शब्द भले ही अलग हों, पर उस भाषा में भी किसी विषय के बारे में सोचने-समझने का तरीका वैसा ही रहता है और जड़ से नहीं सीखना पड़ता।

शिक्षिका 2 : वाह! मैंने तो कभी इस तरह सोचा ही नहीं था कि मातृभाषा दरअसल दूसरी भाषा सीखने में अवरोध का नहीं बल्कि एक मज़बूत नींव का काम करती है। यह वीडियो देखकर तो मुझे लग रहा है कि मातृभाषा एक पुल के समान है जिसको इस्तेमाल किए बिना बच्चे दूसरी भाषा सीख ही नहीं सकते।

शिक्षिका 1 : क्या खूब कही! बहुत बढ़िया। वैसे अब तुम अपनी कक्षा में कोई नियम बदलने वाली हो या नहीं?

शिक्षिका 2 : अरे, बिल्कुल! वागड़ी ना इस्तेमाल करने का नियम अब कक्षा के बाहर। अब तो बच्चों को मैं उनकी भाषा में चर्चा करने से, चाहे व्यक्तिगत हो या अकादमिक, बिल्कुल नहीं रोकूँगी। किसी भी नई अवधारणा पर या कोई भी उच्च स्तरीय चिंतन का काम वागड़ी से ही शुरू करूँगी, जैसे पाठ का सार बताना या अपनी राय देना और उसके बाद ही हिंदी या अंग्रेज़ी में पढ़ाऊँगी। बच्चों की मातृभाषा दूसरी भाषाओं की नीव जो ठहरी। पर हाँ, हिंदी या अंग्रेज़ी सिखाने का काम अलग से भी जारी रखूँगी। उनका शब्द भंडार भी तो बढ़ाना होगा। हो सके तो इस पर भी कभी कोई वीडियो दिखाना और यह वीडियो दिखाने के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया।

शिक्षिका 1 : ज़रूर दिखाऊँगी। मुझे खुशी होगी। चलिए, अब कक्षा में चलते हैं।

<u>गतिविधि 4 : स्वयं करें</u> (Text) (7_16_hin_activity4_do_yourself)

गतिविधि 4 : बच्चों की प्रतिक्रियाएँ - स्वयं करें

अपरिचित भाषा में एक कहानी लें और कक्षा-1 या कक्षा-2 में बच्चों को सुनाएँ। कहानी सुनाने के बाद बच्चों से उस कहानी पर अपरिचित भाषा में ही चर्चा करें

और कहानी से संबंधित उच्च-स्तरीय चिंतन के प्रश्न पूछें। बच्चों की प्रतिक्रियाएँ नोट करें। दूसरे दिन उन्हीं बच्चों को उनके परिवेश और संस्कृति से जुड़ी एक कहानी बच्चों की भाषा में सुनाएँ। इसके बाद बच्चों से कहानी पर बच्चों की भाषा में विस्तार से चर्चा करें और उच्च-स्तरीय चिंतन के प्रश्न पूछें। पुन: बच्चों की प्रतिक्रियाएँ नोट करें। दोनों दिनों की बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर चिंतन करें। क्या वे एक जैसी थी या अलग-अलग? क्यों? इस पर अपने विचार लिखें।

बच्चों की मातृभाषा के प्रयोग हेतु प्रावधान

हमारे देश की नीतियाँ, कानून और संविधान (Text)

(7_17_hin_policies_laws_and_the_constitution_in_our_country)

हमारे देश की नीतियाँ, कानून और संविधान

- **भारतीय संविधान** की धारा 350 – क के अनुसार, "प्रत्येक राज्य और राज्य के अंदर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषा संबंधी अल्पसंख्यक वर्ग के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।"
- **शिक्षा का अधिकार क़ानून 2009** की धारा 29 (2) (f) में कहा गया है कि, "शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक संभव हो सके, बच्चों की मातृभाषा होनी चाहिए।"

चित्र 3 : शिक्षा का अधिकार क़ानून

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार** :
  - छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से सबसे बेहतर रूप से सीखते हैं।
  - जहाँ तक संभव हो सके, कम से कम पाँचवीं कक्षा तक बच्चों की पढ़ाई उनकी भाषा में ही होनी चाहिए।
  - जहाँ तक संभव हो सके, स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री का निर्माण होना चाहिए।
  - कक्षा में बहुभाषी शिक्षण को अपनाते हुए बच्चों के घर की भाषा और स्कूल की भाषा का सोचा-समझा प्रयोग किया जाना चाहिए।
  - बच्चों के पढ़ने-लिखने की शुरुआत उनकी अपनी भाषा में ही होनी चाहिए।

गतिविधि 5 : स्वयं करें (Text) (7_18_hin_activity5_try_yourself)

गतिविधि 5 : मातृभाषा में शिक्षण पर मेरे विचार - स्वयं करें

नई शिक्षा नीति-2020 में मातृभाषा में शिक्षण से संबंधित विभिन्न प्रावधान दिए गए हैं। उन्हें पढ़िए और ऐसी तीन बातें लिखिए जिनसे आप पूरी तरह सहमत हैं? सहमत होने का कारण भी लिखिए।

अपने उत्तर किसी साथी के साथ साझा कीजिये और आपस में चर्चा कीजिये।

बहुभाषी शिक्षण – अर्थ और महत्त्व

<u>बहुभाषी शिक्षण क्या है?</u> (Text)

(7_19_hin_what_is_multilingual_education)

बहुभाषी शिक्षण क्या है?

यह एक मिथक है कि *बहुभाषी शिक्षण का अर्थ अन्य भाषाएँ **नहीं** सिखाना है, जिनकी मदद से बेहतर रोजगार और आगे बढ़ने के मज़बूत अवसर सुनिश्चित होते हैं!* बल्कि, इसके ठीक विपरीत, बहुभाषी शिक्षण में बच्चों की परिचित भाषा को मज़बूत आधार बनाकर नयी भाषाएँ सोचे-समझे रूप से सिखाई जाती हैं।

बहुभाषी शिक्षण = बच्चों की मातृभाषा + दूसरी भाषा + तीसरी भाषा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बहुभाषी शिक्षण पर बहुत विस्तार से चर्चा की गई है। आइये समझते हैं कि इसका क्या अर्थ है।

'बहुभाषी शिक्षण' का अर्थ है शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एक से अधिक भाषाओं का इस्तेमाल करना। बहुभाषी शिक्षण पद्धिति में कोई भाषा छोटी या बड़ी नहीं मानी जाती, बल्कि बेहतर शिक्षण के लिए विभिन्न भाषाओं (बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा) को एक-दूसरे के साथ मिले जुले रूप में

इस्तेमाल किया जाता है। नई भाषाएँ सिखाने के लिए बच्चों की परिचित भाषाओं की भरपूर मदद ली जाती है।

भारत के अधिकतर भागों में बच्चे आरंभिक कक्षाओं में ही बहुभाषी हो जाते हैं। आमतौर पर इन बच्चों की एक (या एक से अधिक) भाषा पर मज़बूत पकड़ होती है, जबकि कोई अन्य भाषा वे अभी बोलना और समझना सीख रहे होते हैं। इस पड़ाव पर यह आवश्यक होता है कि कक्षा में (सभी) बच्चों की (सभी) भाषाओं को एक बहुमूल्य सामाजिक संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जाए, न कि इन भाषाओं के बीच दीवार खड़ी कर दी जाए। स्कूली भाषा की शुद्धता पर जोर देने की बजाय बच्चों को अपनी सभी भाषाओं (बहुभाषिक संसाधनों) और स्कूल की भाषा का मिलाजुला प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे सम्पूर्ण रूप से खुद को अभिव्यक्त कर सकें। साथ ही शिक्षकों को भी किसी एक विशेष भाषा पर ज़ोर देने की बजाय बहुभाषी शिक्षण पद्धति को अपनाते हुए सभी बच्चों की भाषाओं का इस्तमाल करना चाहिए।

इसकी मदद से बच्चे आत्मविश्वास, उच्च स्तरीय चिंतन, रचनात्मकता, अभिव्यक्ति, विश्लेषण, संवेदनशीलता आदि कौशल और गुण विकसित कर पाएँगे।

कक्षा में आपसी संवाद और शिक्षण के लिए बच्चों की भाषाओं का मिलाजुला और लचीला प्रयोग शैक्षिक परिणाम बेहतर करने हेतु एक मज़बूत रणनीति है।

बहुभाषी शिक्षण के लाभ(Text)

(7_20_hin_benefits_of_multilingual_teaching)

बहुभाषी शिक्षण के लाभ

बहुभाषी शिक्षण के बहुत से लाभ हैं। जैसे :

- कक्षा में सीखने-सिखाने के लिए खुशनुमा और सहज माहौल बनना।
- बच्चों में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की भावना पैदा होना।
- बच्चों के पूर्व ज्ञान को नए ज्ञान से जोड़ पाना।
- बेहतर रूप से अन्य भाषाएँ सीखना-सिखाना।
- सभी विषयों में बच्चों की समझ और शैक्षिक परिणाम बेहतर होना।
- रटंत विद्या की जगह समझ, अभिव्यक्ति, कल्पना, रचनात्मकता और उच्च स्तरीय चिंतन पर ध्यान देना।
- ड्रॉप आउट की दर में कमी होना।
- स्कूल और समुदाय का आपसी संबंध मज़बूत होना।
- वंचित समुदायों के बच्चों को बेहतर शिक्षा और रोजगार के मौके मिलना।

बहुभाषी शिक्षण की विशेषताएँ (Text)

(7_21_hin_features_of_multilingual_teaching)

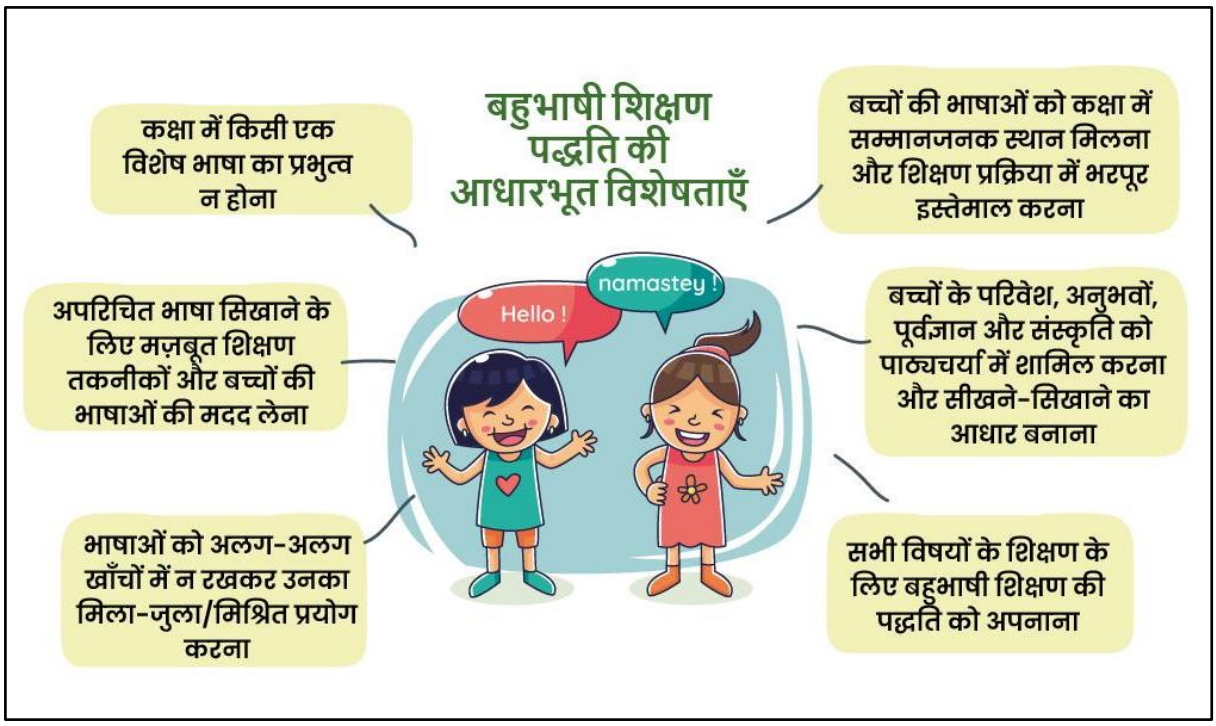

<u>गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें</u> **(**DIKSHA Activity**)**

(7_22_hin_activity6_check_your_understanding)

https://diksha.gov.in/play/content/do_3134304461805322241170 7

गतिविधि 6 : अपनी समझ की जाँच करें

सही विकल्प का चुनाव कर वाक्य पूरा करें -

1. **बहुभाषी कक्षा में** .....
    - बच्चों को प्रतिदिन स्कूल की भाषा के शब्द लिखने का अभ्यास करवाया जाता है।
    - **<u>बच्चों और स्कूल की भाषा को एक समान महत्त्व दिया जाता है।</u>**
2. **यदि कक्षाओं में बहुभाषी शिक्षण के सिद्धांतो को लागू किया जाएगा तो**.....
    - बच्चों और शिक्षक के बीच तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो जाएगी।

- **<u>बच्चे रटने की जगह समझ बनाने की प्रक्रिया में जुड़ पाएँगे।</u>**

3. **बहुभाषी शिक्षण वाली कक्षाओं का एक महत्वपूर्ण गुण है-**.....
    - **<u>सीखने-सिखाने के लिए भाषाओं का मिलाजुला प्रयोग करना।</u>**
    - बच्चों की भाषा में शब्दकोष तैयार करना।

बालवाटिका में बहुभाषी शिक्षण

<u>बालवाटिका में बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग</u> (Text)

(7_23_hin_children's_language_in_balvatikas)

बालवाटिका में बच्चों के घर की भाषा का प्रयोग

औपचारिक शिक्षा की शुरुआत बच्चों के घर की भाषा या परिचित भाषा के माध्यम से होनी चाहिए। नई शिक्षा नीति ने भी इस बात पर ज़ोर दिया है। नीति दस्तावेज़ के अनुसार प्रारंभिक कक्षाओं या 'बालवाटिका' में बच्चों के साथ उनके घर की भाषा में ही सीखने-सिखाने का काम होना चाहिए। बच्चे यदि अपनी मातृभाषा / पहली भाषा में सीखने की शुरुआत करते हैं, तो इससे आगे चलकर उन्हें अन्य भाषाओं को सीखने में भी मदद मिलती है।

“यह जरूरी है कि शिक्षक प्री-स्कूल में बच्चे के साथ उसकी भाषा में संवाद करें और जब बच्चा सहज हो जाए और खुद को अभिव्यक्त करना सीख ले, तो शिक्षक स्कूल की भाषा का परिचय दे सकते हैं।”

एनईपी 2020 के अनुसार, बालवाटिका कक्षाओं में सीखना मुख्य रूप से खेल-आधारित शिक्षा के रूप में होगा, जिसके माध्यम से संज्ञानात्मक, भावनात्मक, साइकोमोटर क्षमताओं और प्रारंभिक साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को विकसित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त एनईपी 2020 बहुभाषी पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति के साथ-साथ बच्चों की मातृभाषा को शिक्षण के माध्यम के रूप में प्रयोग करने की सिफ़ारिश भी करता है, जिससे बच्चे बहुत छोटी उम्र से ही अपने वातावरण और समाज में उपस्थित कई भाषाओं के प्रति जागरूक हो पाएँ।

बालवाटिका कार्यक्रम के लिए बनायी गई प्रारंभिक भाषा और साक्षरता पाठ्यक्रम की रूपरेखा के अनुसार :

- L1 बच्चे की मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा है, L2 क्षेत्रीय भाषा / हिंदी है और L3 अंग्रेजी है। यह संभव है कि कुछ संदर्भों में, वातावरण में एक L4 भी मौजूद हो।

- L1 शिक्षा का प्राथमिक माध्यम है और अधिकांश प्रारंभिक भाषा और साक्षरता का समय इस भाषा पर खर्च किया जाना है।
- L2 और L3 को मौखिक गतिविधियों और पर्यावरण प्रिंट के रूप में पेश किया जा सकता है।
- L2 और L3 पढ़ाते समय, बच्चे को भाषाओं के मिश्रण का उपयोग करके प्रतिक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, विशेष रूप से L1। L1 को L2 और L3 सीखने के लिए स्वतंत्र रूप से उपयोग किया जाना चाहिए।
- स्क्रिप्ट को मुख्य रूप से L1 में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

बहुभाषी शिक्षण की रणनीतियाँ

बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग (Text)

(7_24_hin_childrens_language_in_the_oral_domain)

बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग

जैसा की हमने पहले भी देखा, देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग भाषा संबंधी परिस्थितियाँ पाई जाती हैं। यदि हर परिस्थिति में बच्चों के घर की भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाने की सुविधा निकट भविष्य में उपलब्ध नहीं भी है, तो भी स्कूल में बच्चों के घर की भाषा का मौखिक स्तर पर व्यापक और रणनीतिक प्रयोग तो किया ही जा सकता है।

आइए देखें कि यदि स्कूल में एक अपिरचित भाषा शिक्षण का माध्यम है, तो ऐसी स्थिति में बहुभाषी शिक्षण के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग किस प्रकार किया जा सकता है। ये सभी रणनीतियाँ सभी विषयों के लिए समान रूप से कारगर सिद्ध होंगी।

रणनीति 1	प्रारंभ में कुछ सप्ताह या महीने सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें।
रणनीति 2	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित और रणनीतिक प्रयोग करें।
रणनीति 3	L1 और L2 के मिश्रित प्रयोग को मान्यता और बढ़ावा दें।
रणनीति 4	बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को शामिल करें।
रणनीति 5	पढ़ना-लिखना सिखाने में बच्चों की भाषा की मदद लें।

रणनीति 1

प्रारंभ में कुछ सप्ताह या महीने सीखने-सिखाने का सारा काम बच्चों की घर की भाषा में ही करें, ताकि बच्चों को घर और स्कूल के बीच एक निरंतरता महसूस हो और बच्चे कक्षा में सहज हो सकें। इस अवधि में बच्चों पर स्कूल की भाषा को समझने या उसमें काम करने का तनिक भी दबाव न डालें। एकदम से

स्कूल की मानक भाषा में पाठ्यपुस्तक पढ़ाना शुरू न करें। कुछ सप्ताह या महीने, जैसी ज़रूरत हो, इंतज़ार करें। शुरुआत में बच्चों के साथ अधिक से अधिक कहानियों, गीत, कविताओं पर काम करें, चर्चाएँ और सीखने-सिखाने का काम बच्चों की भाषा में ही करें, ताकि उनका उत्साह और समझ विकसित हो। पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय भी पाठ पहले बच्चों की भाषा में ही समझाएँ।

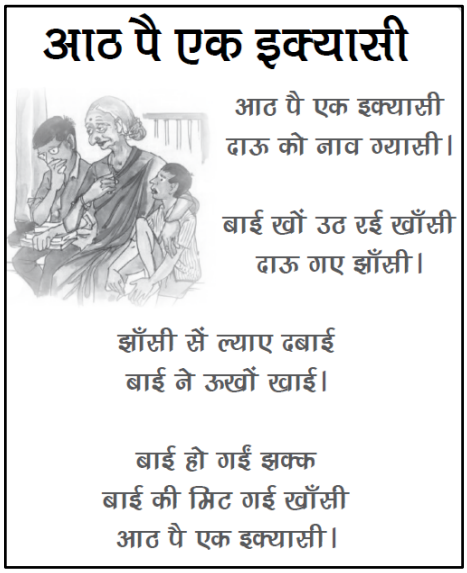

चित्र 4 : उत्तर प्रदेश से एक बुंदेली कविता

रणनीति 2

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा का संतुलित और रणनीतिक प्रयोग करें। कहने का अर्थ यह हुआ कि कुछ समय बाद जब आप पाठ्यपुस्तक पर काम शुरू करने के लिए L2 का कुछ प्रयोग आरंभ भी कर दें, तब भी ध्यान दें कि जब भी कोई नया विषय सिखाएँ, अधिक सोच-विचार वाली चर्चा करें या ऐसा कोई काम जिसमें उच्च-स्तरीय चिंतन कौशल और तर्क करने की आवश्यकता है, तो मुख्य रूप से बच्चों की भाषा का ही प्रयोग करें।

रणनीति 3

L1 और L2 के मिश्रित प्रयोग को मान्यता और बढ़ावा दें। विभिन्न शोध ये दर्शाते हैं कि भाषाओं को अलग-अलग खाँचों में न रखकर उनका मिला-जुला और स्वाभाविक प्रयोग करने से न केवल बच्चों की भाषाओं को पहचान मिलती है, बल्कि कोई भी विषय, अवधारणा या नई भाषा सीखने में भी बच्चों को बहुत मदद मिलती है।

इसलिए, कक्षा की सभी गतिविधियों में समझ, अर्थ-निर्माण, अभिव्यक्ति और आपसी बातचीत के लिए बच्चों की घर की भाषा और स्कूल की भाषा के मिले-जुले प्रयोग को प्रोत्साहित करें। कम से कम प्रारंभिक दो वर्षों तक लेखन में भी बच्चों द्वारा भाषा के मिले-जुले प्रयोग को स्वीकार करें।

भाषाओं का मिला-जुला रूप इस प्रकार हो सकता है :

- शिक्षक और / या बच्चे L1 वाक्य में L2 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- शिक्षक और / या बच्चे L2 वाक्य में L1 शब्दों का प्रयोग करते हैं।
- बच्चे L1 में बोलते हैं और शिक्षक L2 में जवाब देते हैं।
- बच्चे L2 में बोलते हैं और शिक्षक L1 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक L2 में बोलते हैं और बच्चे L1 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक L1 में बोलते हैं और बच्चे L2 में जवाब देते हैं।
- शिक्षक और / या बच्चे सहजता से अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग वाक्य बोलते हैं।
- शिक्षक और / या बच्चे दो भाषाओं को मिलाकर नए शब्द बनाते हैं।

रणनीति 4

बच्चों की संस्कृति और स्थानीय संदर्भों को शामिल करें। सीखने-सिखाने की सभी गतिविधियाँ और चर्चाएँ बच्चों के संदर्भ और परिवेश से जुड़ी होनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास-पुस्तिकाएँ, कहानियाँ, कविताओं के पोस्टर जैसी शिक्षण सामग्रियों में भी स्थानीय संस्कृति के संदर्भों का इस्तेमाल करें।

ध्यान दें कि बच्चों के संदर्भ को कक्षा में लाने के लिए बच्चों की भाषा का प्रयोग अनिवार्य है, क्योंकि उनका ज्ञान उनकी अपनी भाषा में ही निहित है।

रणनीति 5

पढ़ना-लिखना सिखाने में बच्चों की भाषा की मदद लें। आरंभिक समय में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए बच्चों की घर की भाषा के शब्दों का इस्तेमाल करें। बच्चों की भाषा के परिचित शब्दों को स्कूल की भाषा/L2 की लिपि में लिख सकते हैं और उनकी मदद से पढ़ना सिखा सकते हैं। परिचित संदर्भों में समझकर पढ़ना सीखना बच्चों के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होता है। इसी प्रकार, आरंभिक चरणों में यदि बच्चे लिखते समय भी अपनी घर की भाषा के शब्दों का प्रयोग करें, तो उन्हें बिलकुल हतोत्साहित न करें, बल्कि उसे लिखने, सीखने और अभिव्यक्त करने की एक स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा मानें। बहुभाषी स्थितियों में मिलीजुली भाषा का प्रयोग न केवल बोलने-सुनने, बल्कि पढ़ना-लिखना के लिए भी बहुत आवश्यक और लाभकारी है।

पढ़ना-लिखना सिखाने में बच्चों की भाषा के प्रयोग के कुछ उदाहरण:

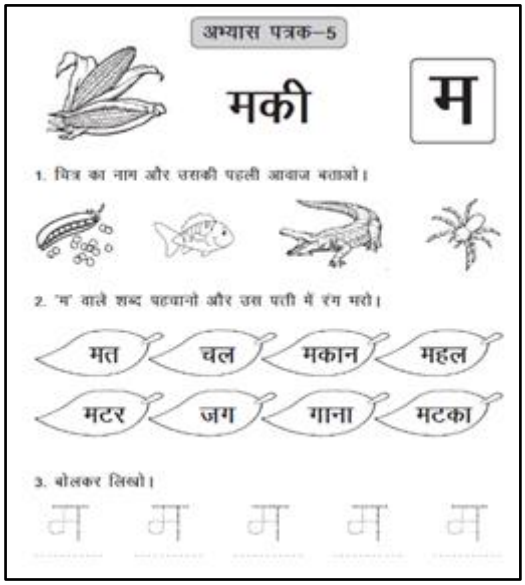

चित्र 5 : 'म' अक्षर की पहचान कराने के लिए वागड़ी भाषा के शब्द 'मकी' का प्रयोग।

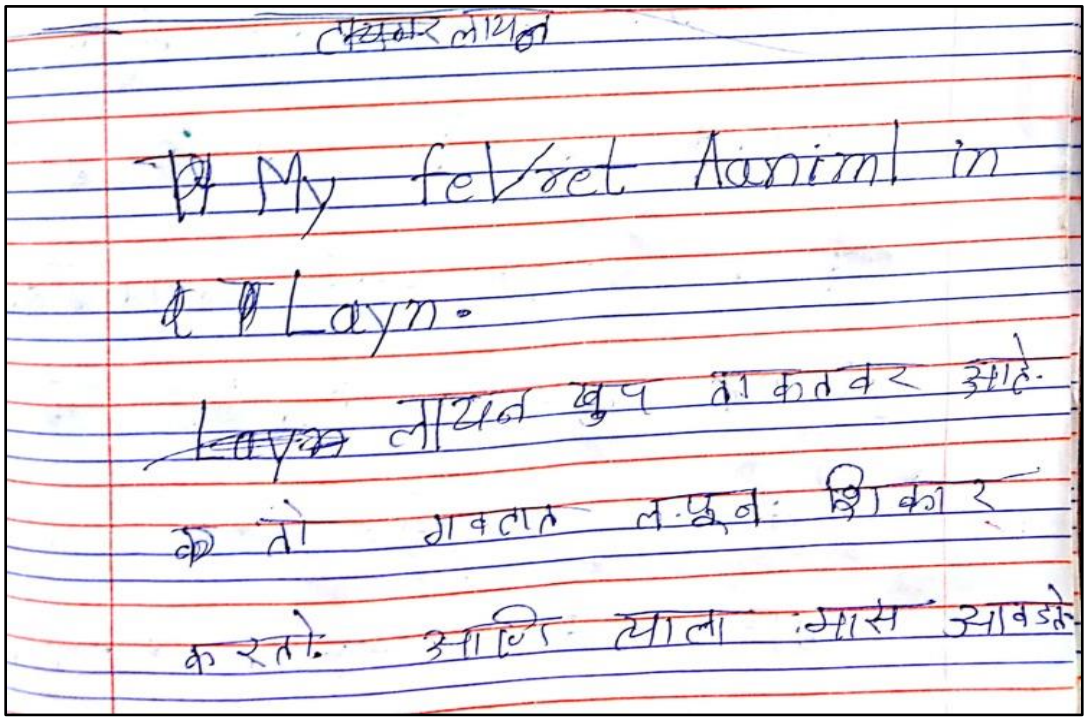

चित्र 6 : बच्ची द्वारा अपनी बात व्यक्त करने के लिए मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषा का मिलाजुला प्रयोग

<u>दूसरी भाषा सिखाने की रणनीतियाँ</u>(Text)

(7_25_hin_strategies_for_second_language_teaching)

दूसरी भाषा सिखाने की रणनीतियाँ

शुरुआत में मौखिक विकास पर ज़ोर	आरंभिक वर्षों/महीनों में L2 के मौखिक विकास पर ज़ोर दें। बच्चों को उस भाषा में बोलने और सुनने के बहुत सारे सहज और सरल मौके दें। (सरल निर्देश, किस्से-कहानियाँ, गीत-कविताएँ, चुटकुले)
L2 सुनने और बोलने के रोचक और मज़ेदार अवसर	बच्चों को L2 के साथ परिचित होने के लिए बहुत से रोचक, आत्मीय और परिवेश से जुड़े हुए अनुभव दें। (भाषा संबंधी खेल, स्थानीय या व्यतिगत अनुभवों पर चर्चा, अपने दोस्त के लिए संदेश देना, रोचक साहित्य आदि)
समझने योग्य L2 का प्रयोग	दूसरी भाषा को बच्चों के लिए समझने योग्य और अर्थपूर्ण बनाएँ। (सरल L2 का प्रयोग, स्पष्ट उच्चारण, चित्रों और हाव-भाव की मदद लेना, L1 की मदद लेना)
भयमुक्त वातावरण	भयमुक्त वातावरण बनाएँ जिसमें बच्चे भाषा का प्रयोग करने में सहज महसूस करें।(जल्दी से L2 सीखने और उसमें आकलन का दवाव न डालें, L1 और L2 का मिश्रित भाषा का प्रयोग मान्य करें)

L2 का शब्द भंडार बढ़ाएं	आरंभिक महीनों में ही बच्चों का L2 में शब्द-भंडार विकसित करें। (L2 के ज़रूरी संज्ञा और क्रिया शब्दों को खेल-गतिविधि द्वारा सिखाना, एक्शन गीत की मदद से वाक्यांश/वाक्य सिखाना, शब्द दीवार बनाना)

अपनी कक्षा में बहुभाषी शिक्षण कैसे करें? (Text)

(7_26_hin_multilingual_teaching_in_your_classroom)

अपनी कक्षा में बहुभाषी शिक्षण कैसे करें?

सारांश

सारांश (Mind Map**)** (7_27_hin_summary)

सारांश

पोर्टफ़ोलियो गतिविधि

असाइनमेंट (Text) (7_28_hin_assignmnet)

असाइनमेंट

मान लीजिये कि आप कक्षा 1 के बच्चों को पढ़ाते / पढ़ाती हैं। बच्चों की घर की भाषा स्कूल में किताबों की भाषा से अलग है। आप बच्चों और स्कूल, दोनों की भाषाएँ जानते/जानती हैं। ऐसी भाषा संबंधी परिस्थिति में हिंदी/अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक का एक पाठ सिखाने के लिए विस्तृत पाठ-योजना तैयार करें। योजना इस आधार पर बना सकते हैं।

- पाठ :
- उद्देश्य :
- शिक्षण-अधिगम सामग्री :
- घर की भाषा में शुरूआती चर्चा के बिंदु :
- पाठ से जुड़े कुछ प्रमुख L2 के शब्दों को सिखाने की योजना :
- घर की भाषा में कहानी सुनाने और चर्चा करने की विस्तृत योजना :
- L2 (या मिश्रित भाषा) में कहानी सुनाने और चर्चा करने की विस्तृत योजना :
- समापन गतिविधि और चर्चाएँ :
- अभ्यास कार्य :
- गृहकार्य :

अतिरिक्त संसाधन

सन्दर्भ (Text) (7_29_hin_references)

संदर्भ

- Foundation, L. a. (2021). *Multilingual Education: Foundation of early education - collection of essays.* New Delhi: Language and Learning Foundation.
- Group, W. B. (2021). *LOUD AND CLEAR: Effective Language of Instruction Policies for Learning* . Washington: International Bank for Reconstruction and Development.
- Jhingran, D. (2019). Early Literacy and Multilingual Education in South Asia. *United Nations Children's Fund Regional Office for South Asia*.
- Khan, M. (2020). *Finding Identity, Equity and Economic Strength by Teaching in Languages that Children Understand.* Karachi: The Citizens Foundation.
- Mandis, I. (2020). Mother Tongue Education: Prioritizing Cognitive Development. *Medium* .
- MHRD. (2020). *National Education Policy 2020.* Government of India.
- Mohanty, A. (2015). Mother tongue vs. English in primary education .*Teachers of India*.
- Naidu, M. V. (2021). Mother tongue is critically important for cognitive, psychological and personality development, education and learning. *The Times of India*.
- Early Literacy and Multilingual Education in South Asia- https://www.unicef.org/rosa/reports/early-literacy-and-multilingual-education-south-asia
- TOI article- https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/toi-edit-page/mother-tongue-is-critically-important-for-cognitive-psychological-and-personality-development-education-and-learning/
- Mother Tongue Education: Prioritizing Cognitive Development- https://medium.com/wikitongues/mother-tongue-education-prioritizing-cognitive-development-3d2641f8c2c5

- Finding Identity, Equity and Economic Strength by Teaching in Languages that Children Understand- https://view.publitas.com/the-citizens-foundation/mtb-mle-research-report/page/16-17?utm_medium=email&utm_source=newsletter&utm_campaign=mtbmle&utm_content=mtb-mle-report-download
- LOUD AND CLEAR: Effective Language of Instruction Policies For Learning https://documents1.worldbank.org/curated/en/517851626203470278/pdf/Loud-and-Clear-Effective-Language-of-Instruction-Policies-For-Learning.pdf
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf
- प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा बनाम अंग्रेजी प्रारम्भिक शिक्षा में मातृभाषा बनाम अंग्रेजी

वेब लिंक (Text) (7_30_hin_weblinks)

वेब लिंक

- Classroom Video for MLE - YouTube https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=vntlWF6VkM0
- बच्चों की अपरिचित भाषा को आरंभिक कक्षाओं में शिक्षण का माध्यम क्यों न बनाएँ? - YouTube

https://www.youtube.com/watch?app=desktop&v=sdzs-8IAwrc&feature=youtu.be

- Mother Tongue Education: Prioritizing Cognitive Development - https://www.youtube.com/watch?v=UxpCHVc8nOc&feature=youtu.be
- कोर्स 10 - इकाई 2 खंड 5.2- MLE Muskaan- https://www.youtube.com/watch?v=3b-N4zjgEyQ
- कहानी पढ़कर सुनाना और चर्चा- https://www.youtube.com/watch?v=2bm7RWsomMo
- MLE a Perspective_ UNESCO - https://www.youtube.com/watch?v=YDsDzlhs_Rw
- International Mother Language Day - DhirJhingran's Session at NCERT, New Delhi- https://www.youtube.com/watch?v=XqnnGguHs7s&t=0
- कोर्स 10- इकाई 3 -खंड 2.1.3- मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षण (UNICEF)- https://www.youtube.com/watch?v=rYwvIV_bzlQ&t=33s

मूल्यांकन

प्रश्नोत्तरी (7_31_hin_quiz)

प्रश्नोत्तरी

1. इनमें से मिश्रित भाषा का उदाहरण नहीं है –
    a. बच्चे L1 में बोलते हैं और शिक्षक L2 में जवाब देते हैं।
    b. बच्चे L2 में बोलते हैं और शिक्षक L1 में जवाब देते हैं।
    c. बच्चे L1 और L2 का मिला जुला प्रयोग करते हैं।
    d. <u>शिक्षक L2 में बोलते हैं और बच्चे L2 में जवाब देते हैं।</u>

2. बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ एल एन) मिशन की सफलता के लिए आवश्यक है-
    a. प्रति सप्ताह परीक्षा लेना
    b. **<u>बच्चों की परिचित भाषा का प्रयोग करना</u>**
    c. सामान्य ज्ञान पर जोर देना
    d. कक्षा 1 से अंग्रेजी की शिक्षा

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में बहुभाषी शिक्षण के संदर्भ में उल्लेख किया गया है-
    a. जहाँ तक संभव हो कक्षा आठवीं तक के बच्चों के शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी ही हो।
    b. जहाँ तक संभव हो कक्षा पाँचवीं तक शिक्षण का माध्यम राज्य की भाषा हो।
    c. जहाँ तक संभव हो कक्षा आठवीं में बच्चों को शिक्षण का माध्यम चुनने की स्वतंत्रता हो।
    d. **<u>जहाँ तक संभव हो कक्षा पाँचवीं तक शिक्षण का माध्यम बच्चों की समझ की भाषा हो।</u>**

4. "भाषा अंतर्निहित निपुणता" का सिद्धांत किसके द्वारा दिया गया था?

a. **जिम कमिंस**

b. पियाजे

c. हैलिडे

d. वायगोत्स्की

5. भारत की जनगणना 2011 के अनुसार भारत में कुल कितनी मातृभाषाएँ बोली जाती हैं?

a. 1269

b. 1369

c. 1469

d. 1569

6. भारत में हुई 2011 की जनगणना से यह बात उभरकर सामने आई कि-

a. अधिकतर लोग एक से अधिक भाषाएँ बोलते हैं।

b. अधिकतर लोग केवल अपनी मातृभाषाएँ ही बोल पाते हैं।

c. केवल 7% लोग आवश्यकता के अनुसार अंग्रेजी बोलते हैं।

d. केवल 7% लोग दो भाषाएँ बोलते हैं।

7. कोर्स में 'वारली पेंटर' की कहानी देने का उद्देश्य क्या है?

a. वारली समुदाय के बारे में बताना।

b. पेंटर की आर्ट गैलरी के बारे में बताना।

c. आवश्यकतानुसार एक से अधिक भाषाओं के उपयोग के बारे में बताना।

d. हिंदी भाषा का प्रयोग कुशलता से कर पाने के बारे में बताना।

8. असम में चाय के बगीचों में काम करने वाले आदिवासी समूहों के बीच की संपर्क की भाषा को कह सकते हैं –

a. असमिया भाषा

b. राज्य भाषा

c. लिंक भाषा

d. मानक भाषा

9. लिंक भाषा का प्रयोग किस परिस्थिति में किया जाता है?

a. जब विभिन्न भाषा संबंधी समुदाय के लोग एक साथ रहते हों।

b. जब एक ही भाषा समुदाय के लोग एक साथ रहते हों।

c. जब किसी एक समुदाय की भाषा को मानक बनाना हो।

d. जब किसी एक समुदाय की भाषा को शिक्षण का माध्यम बनाना हो।

10. यूडीआईएसई के अनुसार भारत के स्कूलों में शिक्षण का माध्यम कितनी भाषाएँ हैं?

a. 36

b. 33

c. 30

d. 39

11. प्राथमिक स्कूलों में लगभग 25% बच्चों को आरंभिक वर्षों में गंभीर चुनौतियों का सामना क्यों करना पड़ता है?

a. स्कूल में बुनियादी सुविधाओं का न होना।

b. घर की और स्कूल की भाषा में अंतर होना।

c. पालक का बच्चों को स्कूल में न भेजना।

d. बच्चों के घर से विद्यालय की दूरी का अधिक होना।

12. भाषा के कारण क्षति उठाने वाले बच्चों में कौन शामिल **नहीं** है?

a. अनुसूचित जनजाति वर्ग के बच्चे जो हिंदी में पढ़ते हैं

b. <u>अंग्रेजी माध्यम में पढ़ने वाले बच्चे जिनके घर में अंग्रजी भाषा का माहौल है</u>

c. ऐसे बच्चे जो अंतरराज्यीय सीमा क्षेत्रों पर रहने के कारण किसी अन्य भाषा में पढ़ते हैं

d. बच्चे जिनकी भाषा लिखित रूप में पर्याप्त रूप से विकसित है, पर शिक्षा के माध्यम के रूप में उपलब्ध नहीं है

13. आरंभिक वर्षों में बच्चों की शिक्षा का माध्यम उनके घर की भाषा ही होनी चाहिए क्योंकि –

a. भाषा एक महत्वपूर्ण विषय है।

b. भाषा के बिना कुछ याद रख पाना असंभव है।

c. <u>भाषा सोचने–समझने व सभी विषयों को सीखने का आधार है।</u>

d. भाषा अधिक अंक अर्जित करने का आधार है।

14. इनमें से शोधकर्ता 'वुल्फ' का कथन है –

a. <u>शिक्षा में भाषा ही सब कुछ नहीं है, लेकिन भाषा के बिना शिक्षा में सब कुछ, कुछ भी नहीं है।</u>

b. शिक्षक चाहे गणित का हो या विज्ञान का, वह भाषा का ही शिक्षक होता है।

c. जब बच्चे भाषा सीखते हैं तो वे बहुत सारे विषयों में से केवल एक विषय सीख रहे होते हैं।

d. पढ़ना–लिखना सीखना मौखिक भाषा के समंदर में तैरना है।

15. ”सीखने की प्रक्रिया में ज्ञात से अज्ञात या परिचित से अपरिचित की ओर ही बढ़ना चाहिए।” यह बात आई है –

a. <u>एनसीएफ-2005 में</u>

b. एनईपी-2000 में

c. आरटीई -2009 में

d. एनईपी -1985 में

16. ज्ञान के सृजन के लिए किस भाषा का पुल आवश्यक है?

a. राष्ट्रभाषा

b. मानक भाषा

c. अपरिचित भाषा

d. <u>परिचित भाषा</u>

17. प्रथम भाषा (L1) से तात्पर्य है–

a. <u>बच्चे की समझ की भाषा</u>

b. स्कूल की मानक भाषा

c. अकादमिक भाषा

d. लिंक भाषा

18. इथियोपिया के भाषा संबंधी मॉडल के अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि –

a. **<u>मातृभाषा में अध्यापन से बच्चों ने सभी विषयों में बेहतर प्रदर्शन किया।</u>**

b. मातृभाषा में अध्यापन से बच्चे गणित विषय में अच्छा प्रदर्शन कर पाए।

c. आरंभिक कक्षा में ही अकादमिक भाषा में अध्यापन से बच्चे सभी विषयों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पाए।

d. आरंभिक कक्षा में अंग्रेजी भाषा में अध्यापन से बच्चे विज्ञान विषय में बेहतर प्रदर्शन कर पाए।

19. गलत कथन चुनें –

a. बच्चे की प्रथम भाषा की मज़बूत नींव उसे अन्य भाषा सीखने में मदद करती है।

b. **<u>मातृभाषा में अध्यापन से बच्चों को अन्य सभी विषयों को सीखने में कठिनाई होती है।</u>**

c. बच्चे अपनी भाषा में सोच-विचार के कौशल सीख लेते हैं, तो उन्हें दूसरी भाषा में भी इस्तेमाल कर पाते हैं।

d. आरंभिक कक्षा में बच्चों को स्कूल की अपरिचित भाषा सिखाने के लिए उनके घर की भाषा का सहारा लिया जाना चाहिए।

20. कक्षा में दूसरी भाषा सिखाने की आधारभूत शर्त **नहीं** है?

a. L2 को बच्चों के लिए सरल, समझने योग्य, रोचक और अर्थपूर्ण बनाना।

b. शुरुआत में ही L2 में आधारभूत शब्द भंडार विकसित करना।

c. बच्चों को L2 का अधिकाधिक अनुभव देना।

d. <u>शुरुआत से ही L2 की शब्दावली लिखना।</u>

21. इनमें से कौन सा वाक्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार नहीं है।

a. छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से सबसे बेहतर ढंग से सीखते हैं।

b. कम से कम पाँचवीं कक्षा तक की पढ़ाई बच्चों की भाषा में ही होनी चाहिए।

c. <u>मातृभाषा में शिक्षण से बच्चे अन्य भाषाएँ नहीं सीख पाते, क्योंकि उसके लिए समय नहीं बचता।</u>

d. बच्चों के पढ़ने- लिखने की शुरुआत उनकी अपनी भाषा में ही होनी चाहिए।

22. बहुभाषी शिक्षण के लाभ में शामिल **नहीं** है –

a. आत्मविश्वास की भावना पैदा होना।

b. <u>कक्षा एक में अंग्रेजी पढ़ना-लिखना सीख जाना।</u>

c. शैक्षिक परिणामों का बेहतर होना।

d. सभी विषयों की बेहतर समझ होना।

23. बहुभाषी शिक्षण पद्धति की विशेषता **नहीं** है –

a. सभी भाषाओं को सम्मान मिलना।

b. भाषाओं का मिला-जुला प्रयोग करना।

c. बच्चों की भाषा का कक्षा में भरपूर प्रयोग करना।

d. <u>कक्षा में किसी एक भाषा का प्रभुत्व होना।</u>

24. रोज़मर्रा के जीवन में हममें से अधिकतर लोग कैसी भाषा का प्रयोग करते हैं?

a. **मिली-जुली भाषा**

b. शुद्ध भाषा

c. मानक भाषा

d. राष्ट्र भाषा

25. बहुभाषिकता का अर्थ है -

a. किसी व्यक्ति का एक भाषा को जानना व प्रयोग करना

b. **किसी व्यक्ति का दो या दो से अधिक भाषाओं का प्रयोग करना**

c. किसी व्यक्ति को अंग्रेजी का ज्ञान होना

d. कक्षा में हिंदी और अंग्रेजी भाषा में शिक्षण करना

26. इनमें से सही कथन है –

a. मातृभाषा में मज़बूत पकड़ बनने से बच्चों को दूसरी भाषा सीखने में कठिनाई आती है।

b. एक भाषा का मज़बूत विकास दूसरी भाषा को सीखने में कठिनाई पैदा करता है।

c. मातृभाषा में लंबे समय तक शिक्षण करने से हिंदी और अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए समय नहीं बचता।

d. **भाषाएँ परस्पर एक दूसरे से मिले-जुले रूप में ही विकसित होती हैं।**

27. वह भाषा जो औपचारिक तौर पर पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण सामग्री और शिक्षण प्रक्रिया में इस्तेमाल की जाती है, वह भाषा _____ कहलाती है।

a. मातृभाषा

b. **शिक्षण का माध्यम**

c. घर की भाषा

d. शिक्षक की भाषा

28. बहुभाषी शिक्षण के संदर्भ में निम्न में से **गलत** वाक्य चुनें।

a. विद्यार्थी उस भाषा में सर्वश्रेष्ठ ढंग से सीखते हैं, जिसे वह सबसे अच्छी तरह जानते हैं।

b. शिक्षक और बच्चों द्वारा भाषाओं का मिलाजुला प्रयोग किया जाता है।

c. अलग-अलग भाषाओं को कक्षा में जगह देने से बच्चों के सीखने पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

d. प्रथम भाषा में जितना अधिक अध्यापन और शिक्षण होता है, शैक्षणिक परिणाम भी उतने ही बेहतर होते हैं।

29. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 मातृभाषा के प्रयोग के बारे में क्या कहती है?

a. छोटे बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से बेहतर रूप से सीखते हैं।

b. कक्षा 5 के बाद केवल स्कूल की भाषा का प्रयोग ही किया जाना चाहिए।

c. बच्चों के पढ़ने-लिखने की शुरुआत स्कूल की भाषा से ही होनी चाहिए।

d. बहुभाषी शिक्षण से बच्चे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में पूरी तरह भाग नहीं ले पाते।

30. शिक्षण कार्य में L1 का प्रयोग करने से

a. बच्चों को सभी विषय समझने में मदद मिलती है।

b. बच्चे कुंठित महसूस करते हैं।

c. बच्चे रटने में बेहतर हो जाते हैं।

d. बच्चों को अकादमिक अवधारणाएँ समझने में मुश्किल होती है।

31. इनमें से कौन सा कथन बहुभाषी शिक्षण के संदर्भ में **सही** है?

a. नई भाषा को जल्दी से जल्दी शिक्षण का माध्यम बनाया जाना चाहिए।

b. कोई नई भाषा जब शिक्षण का माध्यम बन जाए, तब बच्चे की भाषा को हटा दिया जाना चाहिए।

c. बच्चों की भाषा को दूसरी भाषा सिखाने के लिए स्कैफोल्ड के रूप में प्रयोग किया जाता है।

d. बहुभाषी शिक्षण पद्धति केवल भाषा शिक्षण के लिए ही प्रयोग की जाती है।

32. कमला जी कक्षा-2 के बच्चों को हिंदी सिखाना चाहती हैं। उन्हें अपनी कक्षा में निम्न में से कौन- सी रणनीति अपनानी चाहिए?

a. हिंदी भाषा का प्रयोग पूरी तरह से बच्चों के हिंदी समझने के स्तर के अनुसार करना

b. हिंदी भाषा में बड़े और जटिल वाक्यों से पढ़ने के अभ्यास करवाना

c. कक्षा में केवल हिंदी भाषा का प्रयोग करना और बच्चों की भाषा को कक्षा में कम से कम जगह देना

d. बच्चों को अधिक से अधिक हिंदी लिखने का कार्य देना

33. आरंभिक वर्षों में L2 के विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन-सी रणनीति लाभदायक **नहीं** होगी?

a. कक्षा में तनाव रहित और भयमुक्त वातावरण बनाना, जिससे बच्चे कक्षा में कोई भी भाषा का प्रयोग करने में सहज महसूस करें।

b. L2 में आधारभूत शब्द-भंडार विकसित करने पर कक्षा में ज़ोर देना।

c. <u>L2 सिखाने के लिए वर्णमाला को याद कराना और पाठ्यपुस्तक के अभ्यास करना।</u>

d. L2 में बच्चों के स्तर की सहज मौखिक बातचीत और गतिविधियाँ कराना।

34. निम्न में से कौन-सा बच्चा सबसे अधिक मुश्किलों का सामना करेगा?

a. शबाना, जिसके घर की भाषा अंग्रेजी है और कक्षा में भी अंग्रेजी भाषा में पढ़ाई होती है।

b. <u>रमेश, जिसके घर और समुदाय में सब भोजपुरी बोलते हैं और कक्षा में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है।</u>

c. कमला, जिसके घर की भाषा वागड़ी है और कक्षा में वागड़ी एवं हिंदी भाषा का मिलाजुला प्रयोग होता है।

d. दीपक, जिसके घर की भाषा संथाली है और बाजार में हिंदी भाषा सुनने के कुछ अनुभव मिलते हैं और कक्षा में हिंदी भाषा में पढ़ाई होती है।

35. भाषा शिक्षण से जुड़ी भ्रांति चुनिए।

a. <u>जितनी छोटी उम्र में बच्चों को अपरिचित भाषा में पाठ्यपुस्तकें पढ़ने के लिए देंगे, बच्चे वह भाषा उतनी जल्दी सीखेंगे।</u>

b. बच्चों की भाषा उन्हें अन्य भाषाएँ सीखने के लिए मज़बूत आधार देती है।

c. घर की भाषा के प्रयोग से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

d. बहुभाषी शिक्षण में अपरिचित भाषा सीखने-सिखाने के लिए बच्चों की मातृभाषा का प्रयोग भी किया जाता है।

36. "प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषा संबंधी अल्पसंख्यक – वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।" यह कथन कौन से दस्तावेज़ में कहा गया है?

a. आरटीई 2009

b. <u>भारत का संविधान</u>

c. एनसीएफ 2005

d. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

37. गलत कथन चुनें –

a. बच्चे की प्रथम भाषा की मज़बूत नींव उसे अन्य भाषा सीखने में मदद करती है।

b. बच्चे अपनी भाषा में सोच-विचार के कौशल सीख लेते हैं, तो उन्हें दूसरी भाषा में भी इस्तेमाल कर पाते हैं।

c. <u>मातृभाषा में अध्यापन से बच्चों को अन्य भाषाएँ सीखने में कठिनाई होती है।</u>

d. आरंभिक कक्षा में बच्चों को स्कूल की अपरिचित भाषा सिखाने के लिए उनके घर की भाषा का सहारा लिया जाना चाहिए।

38. ज्ञान के सृजन के लिए किस भाषा की आवश्यकता है?

a. राष्ट्रभाषा

b. मानक भाषा

c. राज भाषा

d. <u>परिचित भाषा</u>

39. कमला राजस्थान के कोटा जिले में रहती है, उसके घर की भाषा हाड़ोती है। उसने स्कूल शुरू होने के 4 महीने बाद स्कूल में दाखिला लिया है और आज उसका स्कूल में पहला दिन है। आप ऐसा क्या करेंगे जिससे कमला सहज महसूस कर सके?

a. पहले दिन से ही कक्षा में हिंदी भाषा का प्रयोग करेंगे, जिससे वह स्कूल में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों को अच्छी तरह से समझ पाए।

b. अभी तक उसकी कक्षा में जितने भी कक्षा कार्य हुए हैं उन्हें कमला को पूरा करने के लिए कहेंगे।

c. कमला के साथ गतिविधि पर आधारित अंग्रेजी के कुछ गीत गाएंगे और उसे याद करने के लिए भी कहेंगे।

d. **<u>कमला से हाड़ोती भाषा में खूब सारी अनौपचारिक बातचीत करेंगे।</u>**

40. इस कोर्स में हमने यह सीखा कि -

a. <u>जिन क्षेत्रों में बच्चों की भाषा को शिक्षण का माध्यम नहीं बनया जा सकता, वहाँ बच्चों की भाषा का मौखिक प्रयोग करना चाहिए।</u>

b. हर हाल में कक्षा 1 से कक्षा 10 तक शिक्षण का माध्यम बच्चों की भाषा ही होनी चाहिए।

c. बच्चों का आकलन केवल अंग्रेजी भाषा में ही किया जाना चाहिए।
d. जहाँ तक संभव हो सके, कक्षा में बच्चों की भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।